हिन्दी पत्रिका

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अनुभूति

वर्ष:2022 अंक-चतुर्थ

आज़ादी का अमृत महोत्सव

कार्यालय, महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान),
1,काउंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता-700 001

नराकास,कार्यालय-3 द्वारा इस कार्यालय को विशेष सम्मान प्रदान किया गया। (मई 2022)

नराकास,कार्यालय-3 द्वारा सम्मान के साथ इस कार्यालय को प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया। (मई 2022)

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अनुभूति (2022-सितंबर),चतुर्थ अंक

आज़ादी का अमृत महोत्सव

चित्र 1:गुमशुदा बचपन

चित्र 2:जल ही जीवन है

मुख्य संरक्षक
सुपर्णा देब, महानिदेशक
कार्यालय, महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान)

संरक्षक
भरत चंद्र बेहेरा
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान)

संपादक
डॉ.सुधा तिवारी
हिन्दी अधिकारी

संपादन सहयोग
संजीव कुमार सिंह, वरिष्ठ अनुवादक
पंकज कुमार, डी.ई.ओ.

मूल्य
राजभाषा के प्रति निष्ठा

प्रकाशक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान)
1-काउंसिल हाउस स्ट्रीट,कोलकाता-700 001

अनुक्रमणिका

	पृ.सं.
01.समसामयिक साहित्य-अनामिका की कविताएं डॉ सुधा तिवारी	06
02.तुम्हारी चमकती आँखें लेखक-शेख़ जमाली कम्बोह अंग्रेज़ी से अनुवाद-सुपर्णा देब,	08
03.चित्तकोबरा : स्त्री विमर्श का नया आयाम डॉ सुधा तिवारी	09
04.बादशाह औरंगज़ेब की लाडली जेबुन्निसा उर्फ मखफी की अधूरी प्रेम कहानी नरेन्द्र कुमार	12
05.ढकढोल विमलेश कुमार	16
06.अश्रुबूंद अर्पा देवघरिया	17
07.माँ की ममता श्रीमती प्रिया पाण्डेय	17
08.स्वामिभक्ति शशि रंजन पाण्डेय	18

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अनुभूति (2022-सितंबर),चतुर्थ अंक

आज़ादी का अमृत महोत्सव

अनुक्रमणिका	पृ.सं.
09.कंक्रीट के जंगल अनिल माझी	19
10.मंजिल की ओर अंकित कुमार मल्लिक	19
11.अनोखी गिनती 1 से 20 तक कमलेश कुमार	20
12.परिन्दों का सच अंकित कुमार मल्लिक	21
13.बड़ा डराए पंकज कुमार	21
14.जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप: मानवता की आंखें अतीत में संजय कुमार बोस	22
15.पर्यटन उद्योग और भारत संजीव कुमार सिंह	25
16.पर्यावरण संरक्षण नसीम नज़र	29
17.ऑनलाईन शिक्षा बच्चों पर कितना प्रभावी शाल्मली हांसदा	31
18.गुलिस्तां संपादक	32
19.ऑडिट टूर राज आनंद साह	33
20.कृष्णा मैडम नरेन्द्र कुमार	34
21.रूपावती और अक्षरा अनुपम दास शर्मा	35

अनुक्रमणिका	पृ.सं.
22.निशिभंगा हरी घाटी में अनुपम दास शर्मा	35
23.चाहता हूँ वह क्यों नहीं होता निरमल दास	36
24.खुद में पहले इंसान ढूंढ़े राजीव कुमार	36
25.माँ कहा करती थी निरमल दास	44
26.मेरा सपना जितेन्द्र कुमार	44

चित्र : आवरण कथा

	शीर्षक	चित्रकार	
चित्र 1-	गुमशुदा बचपन	नयन रंजन पाल	01
चित्र 2-	जल ही जीवन है	नयन रंजन पाल	01
आवरण-3			
(क)	दीपावली	त्रिनव पाण्डेय (सुपुत्रः नरेन्द्र कुमार)	
(ख)	ग्रामीण परिवेश	श्रेया पाण्डेय (सुपुत्रीः नरेन्द्र कुमार)	
आवरण-4	आगोमनी	नयन रंजन पाल	

संरक्षक की कलम से ...

अपने नाम के अनुरूप 'अनुभूति' पत्रिका कार्यालय की रूह और इसके सदस्यों की अनुभूति की सार्थक तस्वीर पेश करती है। आजादी के 75 वें साल में निकलने वाले इस चौथे अंक में हमारी कोशिश रही है समसामयिक परिदृश्य से खुद को जोड़े रखने की। ध्यातव्य है कि संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में पूरा राजभाषा परिवार लगा रहता है और इस काम में कार्यालय के सभी सदस्यों से सौजन्यपरक सहयोग की अपेक्षा की जाती है। इस कार्य में कार्यालय के सभी सदस्यों के बीच राजभाषा की पत्रिका एक रचनात्मक पुल का काम करती है। अतः आप सबसे आशा एवं अपेक्षा बनी रहती है कि राजभाषा के प्रति वांछित सहयोग का भाव बनाए रखेंगे।

पत्रिका में अप्रतिम सहयोग के लिए रचनाकारों, सुधि पाठकों एवं नीति निर्देशकों के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करते हुए यह आशा करती हूँ कि संपादक-मण्डल इसी प्रकार पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास के लिए सजग एवं सक्रिय रहेगा।

सुपर्णा

सुपर्णा देब
महानिदेशक
महानिदेशक लेखापरीक्षा खान
कोलकाता

उप-निदेशक की कलम से ...

अनुभूति का चतुर्थ अंक अपने रोचक लेखों, आकर्षक कलेवर और नूतन साज-सज्जा के साथ आपके समक्ष है । पिछले अंक को पाठकों द्वारा काफी सराहा गया है । आशा है कि यह अंक भी पाठकों की उम्मीद पर खरा उतरेगी। आशा करता हूँ कि इस पत्रिका की रचनाएँ, लेख एवं कवितायें इस कार्यालय के साथ-साथ अन्य कार्यालयों के कार्मिकों को भी अपने विचार को संप्रेषित करने में प्रेरित और प्रोत्साहित करेगी।

संघ सरकार के विभिन्न कार्यालयों द्वारा प्रकाशित हिन्दी की पत्रिकाएं न सिर्फ राजभाषा हिन्दी के अनुपालन के संवैधानिक और सांविधिक दायित्व का निर्वहन करती है बल्कि ये कार्मिकों के अभिव्यक्ति का माध्यम भी हैं और उन्हे अपना विचार और चिंतन साझा करने का एक मंच भी प्रदान करती हैं ।

पत्रिका के सफल सम्पादन और आकर्षक साज-सज्जा आदि के लिए संपादक मण्डल और प्रकाशक बधाई के पात्र हैं । शुभकामनाएं ।

भरत चंद्र बेहेरा
उप-निदेशक

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अनुभूति (2022-सितंबर),चतुर्थ अंक

आज़ादी का अमृत महोत्सव

संपादकीय.....

आजादी के 75 वर्ष मनाने में देश मशगूल है, सरकार जश्न मना रही है और जन-मन भी पिछले अंधेरे दिनों को भूलकर एकबार फिर आनंदोत्सव में मग्न है। ऐसे समय में थोड़ी देर ठहरकर क्या विहंगम दृष्टि अपने अतीत पर डालना सही न होगा! एक ऐसे ही संक्रांति काल में हमनें अपने संविधान को अपनाया था और उस नाज़ुक दौर में राष्ट्रीय स्तर पर जन-मन को जोड़ने का काम हिंदी ने किया था, जिसे संविधान सभा ने राजभाषा का दर्जा दिया था। पर जैसा कि होता आया है, संवैधानिक दर्जा मिलने के बावजूद हिंदी भाषा को उसका प्राप्य नहीं मिला और अंग्रेज़ी मानसिकता चारों तरफ काबिज़ है। इसी मानसिकता पर प्रहार करने के लिए और हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को उनके वाजिब जगह पर पदस्थापित करने के लिए सरकार प्रयास कर रही है और हमारा विभाग इसमें बढ़ -चढ़कर योगदान दे रहा है।

सभी क्षेत्रीय भाषाओं को जोड़ते हुए हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु एक सुंदर प्रयास के रूप में हमारी कार्यालयीन पत्रिका 'अनुभूति' उल्लेखनीय प्रयास कर रही है, जिसमें विभिन्न भाषा-भाषी अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी में अपनी रचनाएं प्रकाशन हेतु भेजते हैं और बंगाल की सांस्कृतिक परम्परा को सहेजते हुए कुछ चित्र भी उनके बच्चों ने साझा किए हैं, जिसे आप आवरण में एवं अन्यत्र देख सकते हैं। साथ ही अन्य भारतीय भाषाओं से हिन्दी में अनूदित कविताओं से भी यह अंक सुसज्जित है। आशा है सुधि पाठकों का स्नेह पत्रिका को मिलता रहेगा। आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी। शुभकामनाएं।

सादर

डॉ सुधा तिवारी
हिंदी अधिकारी
महानिदेशक लेखापरीक्षा खान
कोलकाता

**(पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं लेखकों के निजी विचार हैं।
प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है तथा रचनाओं के मौलिकता का दायित्व लेखकों की होगी।)**

समसामयिक साहित्य-अनामिका की कविताएं

डॉ सुधा तिवारी
हिन्दी अधिकारी

हिन्दी की प्रसिद्ध लेखिका अनामिका का जन्म बिहार के मुजफ्फरपुर में 1961 में हुआ, इन्होंने अंग्रेज़ी साहित्य में डॉक्टरेट एवं डी. लिट. की उपाधि प्राप्त की है। इन्होंने स्कूली जीवन से ही लिखना शुरू कर दिया था, इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं- गलत पते की चिट्ठी, बीजाक्षर, अनुष्टुप, समय के शहर में, खुरदुरी हथेलियाँ, दूब धान (कविता संग्रह)। पोस्ट-एलियट पोएट्री, स्त्रीत्व का मानचित्र, तिरियाचरित्रम, उत्तरकाण्ड, मन मांजने की जरुरत, पानी जो पत्थर पीता है (आलोचना)।

अनामिका जी को इनके काव्य-संग्रह 'टोकरी में दिगंत : थेरीगाथा' पर वर्ष- 2021 में साहित्य अकादमी के प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया गया है, यह सम्मान प्राप्त करने वाली पहली एवं एकमात्र स्त्री लेखिका हैं अनामिका जी। कविताएं लिखने के साथ ही यह अंग्रेज़ी भाषा से कविताओं के अनुवाद में भी लगातार सक्रिय रही हैं। वह समकालीन कविता की सुपरिचित कवयित्री तो हैं ही, उनके आकर्षण का दूसरा महत्त्वपूर्ण पहलू हिंदी के स्त्री-विमर्श में उनका दख़ल है।

समकालीन साहित्य हाशिये के लोगों का साहित्य है, इसका प्रमुख स्वर दलित, आदिवासियों एवं स्त्रियों का कथ्य है। आधुनिक कविता ने स्त्री की मध्यकालीन छवि को तोड़कर यह स्थापित किया है कि वह कविता का 'by product' नहीं है बल्कि उसकी अपनी स्वतंत्र छवि है। मैथिलीशरण गुप्त की 'यशोधरा', दिनकर की 'उर्वशी', निराला की 'वह तोड़ती पत्थर' आदि कविताओं में स्त्री का अस्तित्व दिखाई देता है। आधुनिक काल की कविता में स्त्री 'केवल श्रद्धा', 'अबला' और 'नीर भरी दुख की बदली' नहीं है, अब वह पितृसत्ता के 'दुर्ग द्वार पर दस्तक' देती हुई अपनी मंजिल की ओर बढ़ रही है। अब उसे पुरुषों की कविताओं में से झाँकने की जरूरत नहीं है बल्कि वह अब स्वयं रच रही हैं। अनामिका 'कहती हैं औरतें' किताब की भूमिका में लिखा है "एक जमाना था जब पुरुष कविताएँ लिखते थे और औरतें उन कविताओं के अनंत छिद्रों से अच्छी बच्ची की तरह झाँकती मंद-मंद मुस्काया करती थीं। उन औरतों के खास लक्षण होते थे–1.वे सर्वदा सुंदर होती थीं, सर्वांग सुंदर, पर उन्हें डर बना रहता था कि उनसे उनका यौवन और सौंदर्य छिन न जाए, 2.अक्सर वे असमय ही भगवान को प्यारी हो जाती थीं और 3.आजीवन, जीवन के बाद भी उनका इकलौता काम होता था अपने प्रिय में प्रेरणा पम्प करना किंतु अपनी सुध-बुध बिसराए रखना"। अनामिका की कविताएं साधारण स्त्रियों की गाथा हैं। वह कहती हैं कि कविता लिखना एक सूफियाना सिलसिला है। शायद यही कारण है कि इनकी कविताओं में सड़क पर चलने वाली स्त्री, बस में सफर करने वाली स्त्री, गाँव से आयी स्त्री का आख्यान है।

अनामिका की कविताओं का संसार जीवन-जगत की हलचलों से बना है. उसमें गतियां हैं, ध्वनियां हैं, आवाजें हैं। आधी दुनिया के मसले उनकी कविताओं में सहज ही प्रवेश कर गए हैं। उनके समूचे काव्य जगत में स्त्रियां, मौसियां, वृद्धाएं धरती का नमक हैं। पत्ता पत्ता बूटा बूटा, खुरदुरी हथेलियां, आम्रपाली, सेफ्टीपिन, चकलाघर की एक दुपहर, चुटपुटिया बटन, कमरधनियां, तिरहुतिया दुलार, अमरफल, टैगोर को मेरा प्रेमपत्र, प्लेटफार्म पर ग्रामवधुएं, कान्तासम्मित, दरवाजा, चौदह बरस की दो सेक्स वर्कर्स, लंबी छुट्टी पर है ईश्वर- जैसी कुछ चुनिंदा कविताओं को देखें तो इनमें वह वस्तुस्पर्शिता और परदुख-कातरता है जो 'निज के आलाप' में इन दिनों कविता से परे छिटकती जा रही है। अगर गालिब के अल्फ़ाज़ में कहें तो अनामिका की कविताएं जमाने से सवाल करती हैं –

हर एक बात पर कहते हो तुम कि तू क्या है
तुम्हीं कहो कि ये अंदाज-ए-गुफ़्तगू क्या है

अनामिका जी की एक प्रतिनिधि कविता प्रस्तुत है –

स्त्रियाँ

पढ़ा गया हमको
जैसे पढ़ा जाता है काग़ज
बच्चों की फटी कॉपियों का
'चनाजोरगरम' के लिफ़ाफ़े के बनने से पहले !
देखा गया हमको
जैसे कि कुफ्त हो उनींदे
देखी जाती है कलाई घड़ी
अलस्सुबह अलार्म बजने के बाद !

सुना गया हमको
यों ही उड़ते मन से
जैसे सुने जाते हैं फ़िल्मी गाने
सस्ते कैसेटों पर
ठसाठस्स ठुंसी हुई बस में !

भोगा गया हमको
बहुत दूर के रिश्तेदारों के दुख की तरह
एक दिन हमने कहा–
हम भी इंसान हैं
हमें क़ायदे से पढ़ों एक-एक अक्षर
जैसे पढ़ा होगा बी.ए. के बाद
नौकरी का पहला विज्ञापन।

देखो तो ऐसे
जैसे कि ठिठुरते हुए देखी जाती है
बहुत दूर जलती हुई आग।

सुनो, हमें अनहद की तरह
और समझो जैसे समझी जाती है
नई-नई सीखी हुई भाषा।

इतना सुनना था कि अधर में लटकती हुई
एक अदृश्य टहनी से
टिड्डियाँ उड़ीं और रंगीन अफ़वाहें
चींखती हुई चीं-चीं
'दुश्चरित्र महिलाएं, दुश्चरित्र महिलाएं–
किन्हीं सरपरस्तों के दम पर फूली फैलीं
अगरधत्त जंगल लताएं !
खाती-पीती, सुख से ऊबी
और बेकार बेचैन, आवारा महिलाओं का ही
शग़ल हैं ये कहानियाँ और कविताएँ।
फिर, ये उन्होंने थोड़े ही लिखीं हैं।'
(कनखियाँ इशारे, फिर कनखी)
बाक़ी कहानी बस कनखी है।
हे परमपिताओं,
परमपुरुषों–
बख्शो, बख्शो, अब हमें बख्शो !

हमारा भविष्य हमारे वर्तमान पर निर्भर करता है। - महात्मा गांधी

आलस्य वह रोग है, जिसका रोगी कभी नहीं संभलता। - प्रेमचन्द

तुम्हारी चमकती आँखें

(लेखक-**शेख़ जमाली कम्बोह**
अंग्रेज़ी से अनुवाद-**सुपर्णा देब**,
महानिदेशक लेखापरीक्षा खान)

पहाड़ी के ढलान से
रतनपुरा नदी के रेत में
चमकता है नीलम।
मैंने बस देखा
तुम्हारी तितली-सी मुस्कान
तुम्हारी चमकती आँखें।

फटे कुर्ते और जमी अंगुली लिए
मैं उस पहाड़ पे चढ़ रहा हूं।
मेरे लिए ये आसमान, ये लहरें
तुम्हारी खुशी से बढ़कर नहीं हैं, कमाली!
कहते हैं -
इन पहाड़ों की चोटियां
जन्नत से चालीस मील नीचे हैं बस!

(शेख जमाली कम्बोह 16 वीं शताब्दी के चर्चित सूफी कवि हैं, जो सुल्तान सिकंदर लोधी के शिक्षक थे। फारसी भाषा के कवि के रूप में इन्हें खुसरो-ए-सानी का खिताब दिया गया था। प्रस्तुत कविता मूल रूप से उर्दू में लिखी गई है, जिसका अंग्रेज़ी से अनुवाद पेश-ए-नज़र है)

चित्तकोबरा : स्त्री विमर्श का नया आयाम

डॉ सुधा तिवारी
हिन्दी अधिकारी

मृदुला गर्ग सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं और पर्यावरण के महत्व को भी समझती हैं, यही कारण है कि मानव-निर्मित समस्त विद्रुपताओं के प्रति उनकी लेखनी मुखर रही है। इसके साथ ही वह जबरदस्त यात्री भी हैं और तमाम व्यवधानों के बीच उनकी साहित्य-यात्रा भी अनवरत चलती रही। उनके व्यक्तित्व एवं लेखन तथा साहित्यानुराग उनके पिता के संस्कारों एवं संरक्षण में निखरा। पिता की ही तरह मृदुला जी ने भी अपने पारिवारिक दायित्वों को लेखन के साथ-साथ बड़ी खूबसूरती से संभाला। आजादी के पूर्व और आजादी के बाद की लेखिकाओं के बीच तुलनात्मक दृष्टिकोण से जगदीश्वर चतुर्वेदी 'स्त्रीवादी साहित्य विमर्श' में लिखते हैं - 'आजादी के पहले स्त्री कहानी में जहां समाज सुधार, परिवार एवं स्वाधीनता संग्राम हावी था वहीं स्वतंत्र्योत्तर दौर की कहानी समाज-सुधार की बजाय स्त्री के सामाजिक अधिकार, अस्मिता, इच्छाशक्ति और प्रतिरोध को तरजीह देती है। स्त्री लेखिकाओं ने पूंजीवादी व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं की तीखी रचनात्मक आलोचना लिखी है जो कि आजादी पूर्व की कहानियों में तकरीबन नदारद है। नई कहानी के दौर में मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती एवं शिवानी ने स्त्री के मन एवं जिंदगी के प्रामाणिक यथार्थ को उकेर स्त्री चरित्रों की दोहरी स्थिति, मूल्यगत तनावों को वैयक्तिक दृष्टिकोण से रूपायित किया।' (पृ.157)

मृदुला गर्ग का बहुचर्चित और कुछ हद तक विवादास्पद उपन्यास 'चित्तकोबरा' की विषय-वस्तु अपने समय और समाज से काफी आगे की बात कहती है। कुछ-कुछ कंफेशन की तरह नायिका अपने जीवन, अपने अनुभव और चरित्र को अनुभूति-दर-अनुभूति खोलती चलती है। हालांकि कंफेशन को कायरता मानते हुए इसे अपने पाप का बोझ दूसरे मनुष्य के कंधे पर उतार रखने का एक उपक्रम ही मानता है रिचर्ड। अब रिचर्ड कौन है, नायक या प्रतिनायक? चित्तकोबरा का कथ्य कई मामलों में दिलचस्प है। नायिका तो मनु है पर कथा का नायक कौन है? रिचर्ड, जिसके प्रेम में मनु आकंठ डूबी है? या महेश जिसे खुद से दूर जाती पत्नी (मनु) से बेबसी की हद तक चाहत हो आयी है? कहानी एक अजूबा त्रिकोण रचती है, बरमूडा त्रिकोण सी रहस्यमयी।

ऐसे ही त्रिकोण पर रची दो अन्य कहानियों की ओर ध्यान जाता है –'ऊंचाई' और 'यही सच है'। ऊंचाई कहानी में नायिका अपने पूर्व प्रेमी से हुई अचानक मुलाक़ात के बाद उसके प्रति तीव्र आकर्षण महसूस करती है और साथ ही उसके एकाकी जीवन का कारण भी कहीं-न-कहीं खुद को महसूस करती है और एक ऐसे बिन्दु पर पहुँच कर ठिठक पड़ती है जहां अपने वर्तमान और अतीत के आकर्षण के चक्रव्यूह में खुद को बुरी तरह फंसा हुआ देखती है। विवाह और उसके पूर्व या बाद के संबंधों का यह द्वंद्व पारंपरिक भारतीय समाज में होना कोई हैरत की बात नहीं है। यह द्वंद्व मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृति या basic instinct का, उसकी सामाजिक कन्डीशनिंग या प्रशिक्षण के बरक्स सहज प्रस्फुटन है। वह विवाह संस्था जिसमें महेश का

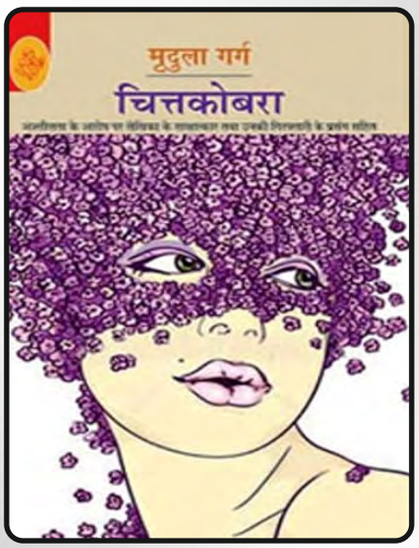

विश्वास नहीं है, जिसे मनु तय शुदा विवाह कहती है और महेश जिसे समाज द्वारा अपनी सुरक्षा के लिए ढूंढा उपाय,उसके औचित्य पर प्रश्न खड़ा करती हैं ये कहानियाँ। चित्तकोबरा में महेश मनु से कहता है –'अगर समाज में रहने वाले हर पति को अपनी पत्नी से प्यार होगा और हर पत्नी को पति से, तो समाज की भला कौन परवाह करेगा? बच्चों की परवरिश बंद हो जाएगी। व्यापार-व्यवसाय ठप्प हो जाएंगे। राजनीति का भट्ठा बैठ जाएगा। बड़े-बूढ़े मर-खप जाएंगे। सभी स्त्री-पुरुष एक-दूसरे में डूबे रहेंगे और देश रसातल को चला जाएगा। प्यार होने पर और कुछ नहीं सूझता, है न?'

हमारा समाज कितना सूझ-बूझ वाला है, 'उसी ने कहा,'अपनी सुरक्षा का कितना बढ़िया उपाय ढूंढ निकाला है। तयशुदा ब्याह है न? ठीक कह रहा हूँ न मैं?'

इसी तयशुदा ब्याह के चक्र में फंसे महेश और मनु यंत्रवत बहते चले जाते हैं, समाज में वे एक आदर्श जोड़ी के रूप में आदर और प्रशंसा प्राप्त करते हैं परंतु एक नाटक के दौरान मनु की रिचर्ड से मुलाक़ात इस तय जीवन में भूचाल ले आती है। रिचर्ड और मनु दोनों ही शादीशुदा हैं और विवाहेतर संबंध में एक-दूसरे के साथ असीम सुख पाते हैं, यह बात कई हलकों में नागवार गुजरी थी।

चित्तकोबरा एक अनुभूति-परक उपन्यास है। इसके कथा का फलक बहुत विस्तार लिए हुए नहीं है पर एक-एक क्षण की सघन अनुभूति दर्ज करने में यह पीछे नहीं रही है। सोते हुए रिचर्ड का ऑर्किड के फूल में तब्दील हो जाने का दृश्य एक मनमोहक चित्र है, भले ही वहाँ मृत्यु की आशंका या भय पृष्ठभूमि में काम कर रहा है।

'कैसे खिल आया...कमरे के गहराते झुटपुटे में? जरूर कहीं कोई भगवान है...या नियति...वह ऑर्किड्स के नीचे दबा पड़ा है. उसके चेहरे का रंग ऑर्किड्स की तरह मोतिया है। बंद आँखों के नीचे जामुनी छाया है। उसके ओंठ ऑर्किड्स के दिल की तरह नीले पड़ते जा रहे हैं।'

एक उपन्यासकार अपनी कथा में बहुत सारे विषय उठाता है, विभिन्न मद्दों पर चर्चा करता है या मुख्य कहानी के साथ-साथ अनेक उपकथाएं उपन्यास का हिस्सा हो सकती हैं, परंतु उसका एक केन्द्रीय विषय या मुद्दा जरूर होता है जिसके आस-पास सारे चरित्र एवं कथाएं गढ़ी जाती हैं। वह केन्द्रीय प्रश्न कथा का क्या है? उसी से लेखक का स्टैन्ड निर्धारित होता है। कृष्णा सोबती, चित्रा मुद्गल, मंजुल भगत, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया आदि लेखिकाओं ने समाज की विसंगतियों एवं विद्रूपताओं को उजागर करते हुए राजनैतिक-आर्थिक मुद्दों पर भी बेबाकी से लिखा और इसके साथ ही स्त्री अस्मिता, पारिवारिक घुटन, वैयक्तिक बेचैनी को भी अपने कथा साहित्य में प्रमुख विषय बनाया। यहाँ उल्लेखनीय है कि इन सब बातों के होते हुए भी स्त्री मुक्ति का प्रश्न इनके लेखन के केंद्र में रहा।

अपने कथ्य और शिल्प में मृदुला गर्ग के उपन्यास कृष्णा सोबती के करीब पड़ते हैं। लेकिन यह भी तथ्य है कि चित्तकोबरा की विषय-वस्तु स्त्री, काम एवं प्रेम होकर भी यह उपन्यास कृष्णा सोबती के 'मित्रों मरजानी' या 'डार से बिछुड़ी' के मयार को नहीं छू पाती है। नायिका के सौन्दर्य चित्रण में 'डार से बिछुड़ी' की पाशो का कोई सानी नहीं है। मित्रों जितनी मुँह जोर है उतनी ही स्वाभाविक भी, उसकी कोई अनुभूति या अभिव्यक्ति ओढ़ी हुई नहीं लगती। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि मनु, महेश या रिचर्ड सभी मध्यवर्गीय पात्र हैं, जो बड़े-बड़े आदर्श भरी बातों पे लहालोट हो सकता है, रोमांचित भी परंतु जब निर्णय की घड़ी आती है उसके पास कोई नायाब तरकीब होती है, एकदम ऐसा जरूरी काम जिसकी वजह से कितनी भी बड़ी पुकार को टाला जा सकता है। चित्तकोबरा की मनु पादरी रिचर्ड के काम, उसके आदर्श, परोपकार के लिए जीवनोत्सर्ग के अटल भाव की जबरदस्त कायल है, बांग्लादेश के कातरजनों की पुकार से वहाँ जाने को उद्यत हो जाती है, पर ऐन जाने के पहले अनजाने देश में अकेले छूट जाने के ख्याल से विकल हो अपने बच्चों की चिंता में शरण लेती है। मध्यवर्गीय जीवन और पात्र एक सुरक्षित जीवन एवं भौतिक सुविधाओं को छोड़कर अजाने जोखिम की ओर अक्सर उन्मुख नहीं होते। खैर, जो नहीं है उसे छोड़ उपन्यास में जो है अगर उसकी बात की जाए, तो जैसा कि लेखिका ने स्वयं भूमिका में कहा है 'जो लिखा है उसे उपन्यास कहते मुझे संकोच हो रहा है। जिस तरह यह लिखा गया, याद करके हँसी आती है। एक कहानी थी जो मेरे अंतर्मन में फैलती-सिकुड़ती रहती थी। फिर... एक दिन उस कहानी के अंतराल का एक-एक क्षण अपनी कड़ी से टूटकर बिखर गया।' लेकिन इस

बिखराव से भी कुछ अंश अत्यंत कलात्मक बन पड़े हैं-"देखो, चाँद के चारों तरफ घेरा है। नीली रोशनी का...देखा?' ...पर आदमी जब खुश होता है तो नाचता है – चाँद के घेरे के नीचे। खुले में। आत्मविभोर होकर। एक आत्मा जन्म लेती है उसके भीतर।

...आवाजों के घेरे में कैद मैं कमरे में चली आयी हूँ।

महेश झपटकर आगे आ गया है।

'क्या हो गया था? उसने पूछा है। प्यार से, आशंका से –'तबीयत तो ठीक है न? बाहर क्यों चली गयी थीं?'

"चाँद के चारों तरफ नीली रोशनी का घेरा है"। (चित्तकोबरा, पृ.सं. 14-15)

और कॉकटेल पार्टी की शोर में, नाचते हुए जोड़ों के बीच मनु असीम आश्वस्ति का अनुभव करते हुए कहती है –'अच्छा ही है, इनमें से कोई नहीं जानता कि मैंने चाँद के नीले घेरे को शीशे में उतार लिया है और शीशा मेरे पर्स में महफूज है। मैं कहीं भी रहूँ, वह मेरे साथ होगा।'

इस उपन्यास की खूबसूरती इसमें है कि कथा के सूत्र संवादों से खुलते हैं। किरदारों की बातें, कल्पनाएं, चुहल और आशंकाओं की डोर पाठक का हाथ थामे कथा में उसे बहाये लिए जाती है। चित्तकोबरा की एक विशेषता इस तथ्य में भी है कि जहां 'ऊंचाई' और 'यही सच है' के पात्र वर्तमान एवं भविष्य के प्रेम में ही उलझे किसी एक जीवन को अंतत: चुनते हैं चित्तकोबरा की नायिका 'मनु' सृजन को चुनती है। इस मायने में वह वस्तुत: राहों की अन्वेषी है। इस अर्थ में चित्तकोबरा उपन्यास मृदुला गर्ग के एक अन्य उपन्यास 'उसके हिस्से की धूप' की अगली कड़ी है, क्योंकि दोनों ही उपन्यासों में नायिका के द्वन्द्व की समाप्ति साहित्य-सृजन में होती है। नैतिकता-अनैतिकता के परे स्वच्छंद स्त्री-पुरुष संबंधों को प्रस्तुत करना ही उपन्यास का ध्येय है और यही बात उपन्यास को विवाद के घेरे तक ले आयी है। फ्रायड के मनोविश्लेषण वाद का सिद्धांत भी इस लेखन की कड़ी रही है। 'उसके हिस्से की धूप' तीन पात्रों – मनीषा, जितेन और मधुकर के इर्द-गिर्द बुनी गयी है। इस उपन्यास में पति जितेन की व्यस्तता के कारण पत्नी मनीषा दाम्पत्येतर संबंध की तरफ़ बढ़ती है और नौबत तलाक तक पहुँच जाती है। परंतु विवाह मनीषा की स्वतंत्रता का पर्याय नहीं बनता, वस्तुत: वह हो भी नहीं सकता। 'स्व' की तलाश करती मनीषा दोनों पतियों- जितेन और मधुकर से असन्तुष्ट ही रहती है। नायिका को निजता का अनुभव तब होता है जब उसकी अपनी कृति का सृजन होता है।

मृदुला जी की कहानियों में स्त्री, अस्तित्व-बोध एवं प्रतिरोध की प्रक्रिया से सीधे तौर पर जूझती हुई दिखायी पड़ती है, यह केवल पुरुष का ही entitlement क्यों हो कि वह अनुभूति से गुजरने के बाद निर्णय ले, स्त्री भी अनिर्णय की इस प्रक्रिया से गुजर सकती है। लेखिका एक प्रश्न और करती हैं चित्तकोबरा के माध्यम से कि आखिर संसार के अलग-अलग धर्मों की मुख़्तलिफ़ नागरिक-संहिताएं हैं परंतु क्या कारण है कि सब की सब मूल रूप से स्त्री-द्वेषी हैं। मृदुला जी के उपन्यासों पर विवाद का एक कारण उनमें ऐसी उन्मुक्त स्त्रियों का चित्रण है जो बगैर किसी गिल्ट के विवाहेतर संबंधों को जीती हैं।

इस दुनिया में कुछ भी स्थायी नहीं है, हमारी परेशानियाँ भी नहीं। - चार्ली चैपलिन

उस ज्ञान उपार्जन का कोई लाभ नहीं जिसमे समाज का कल्याण न हो - स्वामी विवेकानंद

बादशाह औरंगज़ेब की लाडली जेबुन्निसा उर्फ मखफी की अधूरी प्रेम कहानी

नरेन्द्र कुमार
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

सत्रहवीं सदी की बेहतरीन कवियित्री जेबुन्निसा उर्फ मखफी की कहानी मध्यकाल की सबसे त्रासद कहानियों में एक रही है।

बादशाह औरंगज़ेब की सबसे बड़ी संतान ज़ेबुन्निसा का जन्म 5 फ़रवरी, 1639 ई. को दक्षिण भारत के दौलताबाद में फ़ारस के शाहनवाज ख़ाँ की पुत्री बेगम दिलरस बानो (रबिया दुर्रानी) के गर्भ से हुआ था। बचपन से ही ज़ेबुन्निसा बहुत प्रतिभाशाली और होनहार थी। हफीजा मरियम नामक एक शिक्षिका से उसने शिक्षा प्राप्त की और अल्प समय में ही सारा 'कुरान' कंठस्थ कर लिया। विभिन्न लिपियों की बहुत सुंदर और साफ लिखावट की कला में वह दक्ष थी।

जेबुन्निसा को उसके चाचा दारा शिकोह बहुत प्यार करते थे और वह सूफ़ी प्रवृत्ति की धर्मपरायण स्त्री थी। अपने चाचा दारा शिकोह से प्रभावित जेबुन्निसा ने बचपन से अपना ध्यान फ़ारसी और सूफ़ी साहित्य के अध्ययन में लगाया था। जेबुन्निसा अपनी बाल्यावस्था से ही पहले अरबी और फिर 14 साल की उम्र में फ़ारसी में 'मखफी', अर्थात् 'गुप्त' उपनाम से कविता लिखने लगी थी तथा अपनी भावनाओं को वह ग़ज़लों और रूमानी शायरी में ढालने लगी। पिता औरंगजेब के कठोर अनुशासन की वज़ह से दरबार में अदबी महफ़िलों की गुंजाईश नही थी जिसकी वजह से जेबुन्निसा चुपके-चुपके अपना परिचय छुपाकर मखफी नाम से शहर में आयोजित होने वाले मुशायरों की गोपनीय महफ़िलों में शिरक़त करने लगी थी। रूमानी शायरी और सुरीली आवाज के कारण उसकी लोकप्रियता बढ़ने लगी।

उसकी मँगनी शाहजहाँ की इच्छा के अनुसार उसके चाचा दारा शिकोह के पुत्र तथा अपने चचेरे भाई सुलेमान शिकोह से हुई, किंतु सुलेमान शिकोह की असमय ही मृत्यु हो जाने से यह विवाह नहीं हो सका।

अपनी हाज़िरजवाबी से जेबुन्निसा ने सबको कायल कर रखा था। इस संबंध में एक किस्सा यूं है कि उसकी शायरी व शोहरत से नाखुश औरंगज़ेब की शह पर एक बार नासिर अली नाम के एक पारसी शायर ने उसके सामने यह शर्त रखी कि उसके लिखे कलाम की पहली पंक्ति की जोड़ में वह तीन दिनों के अंदर दूसरी पंक्ति लिखकर दे, अन्यथा हमेशा के लिये शायरी करना छोड़ दे।

नासिर अली की लिखी पहली पंक्ति इस प्रकार थी:

'है नामुमकिन ढूंढ पाना ऐसे मोती को/ जो सफेद भी हो और काला भी।'

इसके तोड़ में जब जेबुन्निसा ने नियत समय में दूसरी पंक्ति लिखकर आगे बढ़ाई, तो उसकी काबिलियत के सभी कायल हो गये:

'है जरूर नामुमकिन ढूंढ पाना ऐसे मोती को, पर आंसुओं के उन मोतियों को छोड़कर, जो टपकी हों काजल से भींगी किसी खूबसूरत आंखों से।'

जेबुन्निसा का सौंदर्य अप्रतिम था। लंबे कद की सतर चाल वाली जेबुन्निसा को कविताओं के साथ समकालीन फैशन की भी गहरी समझ थी। परिधान के मामले में वह सादगी पसंद थी, पर उसके कपड़ें सुरुचिपूर्ण होते थे। आज महिलाओं के बीच लोकप्रिय अंगिया कुर्ती उसी की देन है। भले ही जेबुन्निसा सादगीपसंद थी, पर उसके शायराना दिल को अपनी खूबसूरती का एहसास था। तभी तो वह कह उठती है :

'जब भी उठाती हूँ मैं चेहरे से अपने नकाब, मुरझाकर पीले पड़ जाते हैं गुलाब।'

एक बार की बात है, एक चीनी व्यापारी ने बादशाह औरंगजेब को एक शीशा भेंट किया। बादशाह ने शीशे को महल के हरम में भिजवा दिया, देखा भी नहीं। एक दिन मल्लिका जेबुन्निसा छत पर धूप में बैठी थी कि उन्हें शीशे की याद आई। वह दासी से बोली, 'जा! चीन से जो शीशा आया है, उसे ले आ।' दासी दौड़कर गई, शीशा उठाया और उसने उस शीशे में अपना मुंह देखना चाहा। शीशा देखते ही वह अचंभित रह गई। वह इतनी खूबसूरत है। वाह! और फिर वह आपे से बाहर हो गई। अपने आप में जैसे खो गई। बेसुध! बेखबर! शीशा उसके हाथ से छूटा, फर्श पर गिरा और टूट गया।

अब तो दासी के पैरों तले की जमीन खिसक गई। चेहरा पीला पड़ गया। डरती-डरती उसने सोचा, अब तो मेरी खाल ही खिंचवा ली जाएगी। यह सोचते-सोचते वह वहीं पर सहमी-सहमी सी खड़ी रही। देर होने पर मल्लिका ने पुकारा, 'अरी! तुझे शीशा लाने को कहा था न, पत्थर बन गई क्या?' डरी हुई दासी आई और सहमी हुई बोली, 'अज कजा आईना-ए-चीनी शिकस्त।' यानी 'मेरी शामत आ गई, राजकुमारी जी! मेरे खोटे कर्मों से वह शीशा टूट गया।'

फिर कठोर दंड की सोचकर थर-थर कांपने लगी। उसका कंठ सूख गया था। उसके प्राण जैसे उड़े जा रहे थे। माथा चकरा रहा था। परंतु उसे क्या पता, बेगम पर उपनिषदों का रंग चढ़ चुका था।

उन्होंने मुस्कराकर बड़े ही आत्म-संतोष के साथ जो कहा, वह प्रशंसनीय ही नहीं, अनुकरणीय भी है। मल्लिका ने कहा, 'अज कजा आईना-ए-चीनी शिकस्त, खूब शुद सामाने खुदबीनी परस्त।' 'यानी अच्छा हुआ, विलासिता का एक सामान समाप्त हो गया। मैं प्रतिदिन उसे देखती, अपने सौंदर्य पर घमंड होता। अब उसे न मैं देखूंगी और न घमंड ही होगा।' मल्लिका के मुख से यह सुन सब भौंचक्के रह गए।

पहली नाकाम मोहब्बत जैबुन्निसा की बुन्देलखण्ड के महाराजा छत्रसाल ने एक बार औरंगजेब के लिए युद्ध किया था, लेकिन किन्हीं कारणों से उन्होंने विद्रोह कर दिया था और अपना अलग राज्य बना लिया था। औरंगजेब इस चलते छत्रसाल को अपना दुश्मन मानता था। जैबुन्निसा ने किसी कार्यक्रम के दौरान बुंदेला महाराजा छत्रसाल को देखा तो वह उसको अपना दिल दे बैठी। इसके बाद जैबुन्निसा ने भरोसे की दासी के जरिये अपनी मोहब्बत के इजहार को राजा छत्रसाल तक पहुंचाया था, लेकिन औरंगजेब की सख्त पहरेदारी और परदेदारी की वजह से औरंगजेब के सामने मामला खुल गया। यह बात औरंगजेब को नागवारा हुई एवं फटकार लगाकर जैबुन्निसा को चुप करा दिया।

इतिहासकारों के अनुसार, जैबुन्निसा ने मराठा छत्रपति शिवाजी की बहादुरी को लेकर कई किस्से सुन रखे थे। कुछ महीने बाद जैबुन्निसा ने शिवाजी को आगरा में देखा तो वह बहादुरी की कायल होने के साथ मोहब्बत भी कर बैठी। इस बीच मौका मिलने पर जैबुन्निसा ने अपना प्रेम निवेदन शिवाजी महाराज तक भिजवाया, लेकिन राजनैतिक कारण से शिवाजी ने प्रेम निवेदन स्वीकार नहीं किया जिससे जैबुन्निसा का दिल कुछ इस कदर टूटा कि वह मायूस होकर शेर-ओ-शायरी की दुनिया में डूब गई।

रूमानी शायरी और सुरीली आवाज के कारण जैबुन्निसा की लोकप्रियता बढ़ने लगी। इन्हीं मुशायरों के दौरान युवा शायर अकील खां रज़ी से उसका परिचय हुआ। मुशायरों के दौरान जैबुन्निसा को शायर अकील खां रजी से इश्क हो गया, लेकिन यह मोहब्बत भी जल्द ही चर्चा में आ गई। बताया जाता है कि दिल्ली में सलीमगढ़ का किला उन दोनों के इश्क का गवाह बन गया।

उन दोनों की मुशायरों से अलग भी व्यक्तिगत मुलाक़ातों की ख़बर जब औरंगज़ेब तक पहुंची तो उसे अपनी बेटी का रूमान बिल्कुल पसंद नहीं आया। मुगल सल्तनत वैसे भी अपनी बेटियों के प्रति ज्यादा रूढ़िवादी और अनुदार रहा था। अकील खां रजी से अपनी बेटी की इस मोहब्बत को औरंगजेब बर्दाश्त नहीं कर पाया एवं लाख मनाने के बाद भी जब जैबुन्निसा नहीं मानी तो औरंगज़ेब ने किसी चोट खाई नागिन की तरह फुंफकारते हुए हुक्म दिया कि "ले जाओ मेरे सामने से इस आज़ाद ख्याल लड़की को और सलीमगढ़ के उसी किले में कैद कर दो, जहां उसके महबूब ने दम तोड़ा था। और जब तक मेरा हुक्म न हो, इसे बाहर निकलने की इजाज़त न दी जाए।"

एक उदास काफिला सलीमगढ़ की ओर चल दिया। रास्ता उदास था। कहार बिना शोर किए खामोशी से शहजादी जैबुन्निसा को डोली में सवार किए आगे बढ़े जा रहे थे। घोड़ा गाड़ियों के चलने से टक-टक के साथ कभी-कभी घुंघरूओं की

आवाज़ भी खनक जाती। काफिला बढ़ता गया और पहुंच गया उस सूने सलीमगढ़ में जहां अभी अकील खां की रूह खामोश नहीं हुई थी। एक अजीब-सी दहशत चारों तरफ फैली थी। औरंगज़ेब ने उसे 1691 में दिल्ली के सलीमगढ़ किले में कैद करवा दिया। इसके बाद उसके प्रेमी अकील खां रजी को उसी सलीमगढ़ के किले में औरंगजेब ने उसके सामने ही हाथियों से कुचलवा कर मरवा दिया और उसके शव को दूर लाहौर के एक गुमनाम स्थान पर दफना दिया।

कुछ रोज तड़फड़ाने के बाद जैबुन्निसा ने उस कैदखाने को ही अपना आशियाना समझ लिया था। एक पंछी की मानिंद, जैसे पंछी को जब पिंजड़े में कैद करो, तो वह तड़पता है, फड़फड़ाता है और बाहर निकलने को बेचैन हो उठता है। लेकिन धीरे-धीरे वह पिंजड़े का आदी हो जाता है और दरवाजा खुला हो, फिर भी कहीं नहीं भागता। जैबुन भी उस पंछी की मानिंद हो चुकी थीं। बताया जाता है कि औरंगजेब ने जैबुन्निसा को उसके प्रेमी से अलग कर कैदखाने बंद करवाया तो वह शायरी लिखने लगी। वह आजीवन अविवाहित रहीं। कैद के दौरान जैबुन्निसा ने 5,000 से भी ज्यादा गजलें, शेर और रुबाइयां और कविता संकलन 'दीवान-ए-मख्फी' लिखी।

औरंगजेब की हिंदुओं के लिए नफरत को देखते हुए जैबुन्निसा ने कैद के दौरान विद्रोह करते हुए कृष्ण को अपना लिया और कृष्ण भक्ति में समर्पित हो गई। मुग़ल समाज में जैबुन्निसा का स्थान वही है जो मीराबाई का था। जैबुन्निसा की शख्सियत का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि मुगल खानदान में उसके आखिरी शासक बहादुर शाह ज़फर के अलावा जेबुन्निसा की शायरी को ही दुनिया सराहती है। मिर्जा गालिब के पहले वह अकेली शायरा थी जिनकी रुबाइयों, गज़लों और शेरों के अनुवाद अंग्रेजी, फ्रेंच, अरबी सहित कई विदेशी भाषाओं में हुए हैं।

तन्हाई में ही गुजरे कैद के मुश्किल और अकेले दिनों में उनकी शायरी खूब परवान चढ़ी। एक रोज सलाखों के बाहर क़िले के अहाते में टहलते हुए जैबुन्निसा यूं ही चलते-चलते बुदबुदाने लगीं:

'खुदा कहे कि मैं तुम्हें हर्जाना दूंगा, उन तमाम इंतजामात का
जो ताउम्र तुमने सहे, तो क्या हर्जाना दे सकेगा वह मुझे
जन्नत के तमाम आराम और उनकी नेमतों के बावजूद
एक तो उधार रह ही जाएगा खुदा पर मेरा....।'

20 साल तक कैद में रहने के बाद जैबुन्निसा ने यहीं दम तोड़ दिया। कहते हैं सलीमगढ़ किला दिल्ली कि उन भूतिया जगहों में शामिल है जहां लोगों को अजीब-अजीब आवाज़ें सुनाई देती हैं।

एक शहजादी, जिसने कभी ऐशो-इशरत से अपनी ज़िंदगी का आग़ाज़ किया था, उसका अंजाम कैदखाने तक उन्हें ले आया। अपनी और अपने खुद के लिए फैसलों की वजह से वह एक कैदी में तब्दील कर दी गईं। उनकी कभी शादी न हो सकी और यहीं 26 मई सन 1702 में उन्होंने इस दुनिया को अल्विदा कह दिया। उनके इंतकाल के 50 साल बाद उनकी शायरी को दीवाने मख़्फी के नाम से एक किताब की शक्ल दी गई, जो आज भी लाहौर और लंदन के संग्रहालय में मौजूद है।

सलीमगढ़ किले तक पहुंचने के लिए लालकिला के मुख्य गेट से करीब एक किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है। जब आप लाल किले से होते हुए छत्ता बाजार चौक तक पहुंचते हैं और बाईं ओर संग्रहालय की तरफ मुड़ जाते हैं तो वह रास्ता सलीमगढ़ की तरफ जाता है। जो लोग इस किले को देखने का मन बनाकर जाते हैं, वही यहां तक पहुंच पाते हैं। देखरेख की गैरजिम्मेदारी ने सलीमगढ़ की वह जगह, जहां शहजादी दफ्न थी उसे तबाह/ बरबाद कर दिया है। वो निशान मिट गए हैं और वक्त की बेबसी का रोना रो रहे हैं। अब उस रास्ते पर रेल की पटरियां बिछा दी गई हैं। बड़े अफसोस की बात है कि इतिहास की ख़ूबसूरत शहजादी जैबुन्निसा के सीने पर अब रेल के पहिए दौड़ रहे हैं।

आभारी हूं मैं तमाम इतिहासकारो का जिन्होंने प्रेम की शहजादी जैबुन्निसा को आज तक इतिहास में जिंदा रखा है।

प्रेम के कारण दुनिया का सबसे लंबा अलग और अकेला होने की स्थिति झेलने वाली जेबुन्निसा की एक कविता इस प्रकार है।

अरे ओ मख्फी, बहुत लंबे हैं अभी तेरे निर्वासन के दिन
और शायद उतनी ही लंबी है, तेरी अधूरी ख़्वाहिशों की फेहरिस्त
अभी कुछ और लंबा होगा, तुम्हारा इंतज़ार
शायद तुम रास्ता देख रही हो कि उम्र के किसी मोड़ पर
किसी दिन लौट सकोगी अपने घर, लेकिन, बदनसीब घर कहां बच रहा है तुम्हारे पास
गुज़रे हुए इतने सालों में, ढह चुकी होंगी उसकी दीवारें, धूल उड़ रही होगी अभी उसके दरवाजों और

खिड़कियों पर, अगर इंसाफ़ के दिन ख़ुदा कहे कि मैं तुम्हें हर्ज़ाना दूंगा, उन तमाम दुखों का जो जीवन भर तुमने सहे
तो क्या हर्ज़ाना दे सकेगा वह मुझे, जन्नत के तमाम सुखों के बाद भी
वह एक शख्स तो उधार ही रह जाएगा ख़ुदा पर तुम्हारा !

शब्द	शब्दार्थ
मँगनी	सगाई, वह वैवाहिक रस्म जिसमें वर-कन्या का संबंध पक्का और तय होता है
मखफी	'गुप्त' उपनाम
रूमानी	प्रेम लीला, प्यार
नेमतों	धन, पूँजी, संपत्ति, दौलत, समृद्धि, ईश्वर की कृपा, ईश्वरीय देन, उपहार, वरदान आदि
ताउम्र	जीवन के आरम्भ से लेकर अंतिम समय तक
मानिंद	समान, सदृश
हर्जाना	वह धन जो किसी हानि की पूर्ति के लिए दिया जाय
खनक	चूड़ियों की मीठी ध्वनि
रूबाइयों	रुबाइ चार पंक्तियों की कविता है जिसकी पहली दो और चौथी पंक्तियाँ तुकात्मक होती है और तीसरी लाइन आज़ाद रखी जा सकती है
गुंजाईश	क्षमता; सामर्थ्य
कहार	पानी भरने तथा डोली या पालकी आदि ढोने वाली एक जाति
इंतकाल	मृत्यु

ढकढोल

विमलेश कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
दुर्गापुर

मिथिलांचल में आम-बोल-चाल में एक शब्द बहुत प्रचलित है- 'ढकढोल'। विशेषकर बच्चों के लिए प्रयोग होता है। अर्थात बिल्कुल सीधा, सरल दाँव-पेंच का ज्ञान नहीं रखने वाला। दूसरे शब्दों में वह कोई भी ढकढोल की श्रेणी में आता है जो समय और परिस्थिति के अनुसार व्यावहारिक न हो या कहें कि कूटनीति से काम न लेता हो। एक बात यहाँ स्पष्ट करना जरुरी है कि 'ढकढोल' शब्द का प्रयोग किसी के प्रति घृणा या नकारात्मकता दर्शाने के लिए नहीं किया जाता है बल्कि किसी की अत्यधिक सरलता के प्रति सहानुभूति के साथ असंतोष दर्शाने के लिए किया जाता है।

मैं भी बचपन में इस सरलता का शिकार था। मेरी माता जी कभी-कभार अपने मुखारविंद से मेरे लिए इन शब्दों का प्रयोग कर देती थी। एक दिन उनकी बात मुझसे बुरी लग गई और मैंने उनसे कहा कि 'आप मुझको 'ढकढोल' क्यों बोलती हैं?' उन्होंने पहले तो मुझको बहुत समझाया और कहा कि 'एक बात को तुम चार-बार में समझते हो फिर अगर तुम्हारे सामने से कोई आकर कोई सामान लेकर चला जाता है तो तुम उसको रोकते नहीं हो?' आदि। ये सब सुनने के बाद भी जब मैं शान्त नहीं हुआ तो उन्होंने मुझको शान्त करने के लिए एक कहानी सुनाई। वो इस प्रकार था :-

.....एक गाँव में एक किसान परिवार रहता था। उस परिवार में किसान, उसकी पत्नी और उसका एक बेटा था जो स्कूल में पढ़ता था। किसान खेतों में काम करता और उसकी पत्नी घर का काम देखती थी। उसका बेटा पढ़ने में बहुत अच्छा था। लेकिन जब भी बाप के सामने बेटा होता था तो बाप कभी नहीं बोलता था कि तुम पढ़ाई में बहुत अच्छे हो? वह यही कहता इतना तो सब करते हैं, अभी इसको बहुत मेहनत करनी है। बार-बार अपने पिता की बात सुनकर बेटा एक दिन क्रोध में आ गया और आज पिताजी को सबक सिखाना है। उसने योजना बनाई कि आज रात पिताजी पर वार करना है। रात में सब खा-पीकर सोने चले गए। बेटा को जब लगा कि अब माँ-पिताजी सो गए होंगे तो वह पिता के कमरे की ओर बढ़ा-लेकिन उस दिन माता-पिता देर तक जग रहे थे और बातें कर रहे थे। वह किवाड़ की ओट में छिपकर अपने माता-पिता की बातें सुनने लगा। माँ उसके पिता से पूछ रही थी-'मेरा बेटा पढ़ने में इतना अच्छा है फिर भी तुम उसको बोलते रहते हो? अभी कुछ नहीं हुआ, अभी तो और पढ़ना है! तुम अपने बेटे को प्यार नहीं करते हो?' अपनी पत्नी की बातें सुनकर किसान उसको समझाते हुए बोला-'अरी पगली तुम क्या जानो कि मैं अपने बेटे को कितना चाहता हूँ। वही तो हमारे बुढ़ापे की लाठी बनेगा। मुझको सब पता है कि मेरा बेटा पढ़ने में अव्वल है। उसके सभी दोस्त इस कारण उससे ईर्ष्या करते हैं। मैं नहीं चाहता कि मेरा बेटा इस छोटी सी सफलता से ही संतुष्ट हो जाए। उसको को बहुत बड़ा बनना है। बहुत पढ़ना है, बहुत आगे जाना है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि अभी कुछ नहीं हुआ अभी तो बहुत मेहनत करना है। मैं उसकी पढ़ाई से संतुष्ट ही नहीं गद्‌गद् हूँ।'

अपने माता-पिता की ये बातें सुनकर बेटा बहुत लज्जित हुआ और उसको अपनी भूल का एहसास हुआ। वह चुप-चाप दबे पाँव अपने कमरे में लौट गया और मन-ही-मन अपने पिता से बार-बार क्षमा माँग रहा था।

ये कहानी सुनकर तब मैं भी भावुक हो गया था। आज मेरी माता जी तो नहीं हैं लेकिन उनकी सुनाई ये कहानी मुझको भावुक कर देती है। कोई भी माँ-बाप कभी भी अपने बच्चे का बुरा नहीं सोचते। उनकी कड़वी बातों में भी बच्चों के कल्याण का ही उद्देश्य होता है।

अश्रुबूंद

अर्पा देवघरिया
स. लेखा परीक्षा अधिकारी
डी.टी.पी.एस.,दुर्गापुर

बेहद अपनेपन के भाव से ओत-प्रोत हृदय
दूर होने के अहसास से भयभीत निगाहें,
और अनछुई आशाओं-आकांक्षाओं की क्षण भंगुरता
बहाती है डबडबाई आँखो से अश्रुबूंद।
झर से उंगली गालों को छुती हुई उस
अश्रुबूंद को अपने नाखुन पर ले जाती है
फिर जीभ द्वारा उसके विलय की अनुभूति
उस एक क्षण में दोनों पूरी जिन्दगी जी जाते हैं
सारी प्रकृति, सारी कायनात अपनी दिशा
और गति बदलकर मिलन के प्रतिपादन
में जुट जाती है।
और अश्रुबूंद !
वो भी अपना नमकीन धर्म छोड़
जीभ पर मीठेपन का अहसास दिला जाता है।

माँ की ममता

श्रीमती प्रिया पाण्डेय
पत्नी-शशि रंजन पाण्डेय
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
डी.टी.पी.एस, दुर्गापुर

माँ ही है बीच से जिनकी, सृष्टि का आधार।
माँ ही है, वह शक्ति, जिससे चलता है संसार।।
जीवन की कश्ती ...भंवर, और माँ ही है पतवार।
माँ ही है, वह शक्ति जिससे चलता है संसार।।
सारा जग है यदि प्ररेणा, तो माँ उसका प्रभाव है।
कुंढित मन में वह आशा की, जगी हुई एक भाव है।
इस धरती पर माँ ने लिया है, देवी का अवतार।
माँ ही है वह शक्ति जिससे चलता है संसार।।
माँ तूने ही हर विपदा से, हमको है निस्तारा।
मेरे लड़खड़ाते कदमों को, तूने दिया सहारा।।
माँ तूने ही नाम दिया है, माँ तूने पहचान दिया है,
दिये सभी अधिकार।
माँ ही है वह शक्ति जिससे चलता है संसार।।
मेरे खातिर जाने कितने दर्द सहे अपमान सहे।
माँ तूने मुझपर अपना है, सबकुछ कुर्बान किया।।
बनकर तूने ढाल प्रखर, सहे सहस्त्र प्रहार।
माँ ही है वह शक्ति जिससे चलता है संसार।।

जीवन को ऐसे जियो कि जैसे कोई देख नहीं रहा हो और अपने आप को व्यक्त ऐसे करो कि जैसे हर कोई सुन रहा हो। - नेल्सन मंडेला

छोटी चीजों में वफादार रहिये क्योंकि इन्हीं में आपकी शक्ति निहित है। - मदर टेरेसा

स्वामिभक्ति

शशि रंजन पाण्डेय
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
डी.टी.पी.एस,दुर्गापुर

हमारे जीवन में पालतु पशुओं का विशेष महत्व है, सभी पालतू जीव अपने स्वामी के प्रति निष्ठा एवं वफादारी का निर्वहन करते हैं। किंतु स्वान की स्वामीभक्ति की कोई पराकाष्ठा या सीमा नहीं होती, आप इनसे जितना प्रेम करेंगे, उसका सैकड़ों गुणा प्रेम और वफादारी का परिचय ये दे देते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाय कि स्वान और स्वामीभक्ति शब्द समानार्थक प्रतीत होते हैं। आप सोच रहे होंगे कि ये मैं अचानक से क्या सोच रहा हूँ।

बात उन दिनों की है, जब मैं लगभग 10-12 साल का था, हमलोग अक्सर गर्मी की छुट्टियों में अपने नानी के घर जाया करते थे। तब उन दिनों ट्रेन का सफर भी हम लोगों के लिए किसी पिकनिक से कम नहीं हुआ करती थी, साथ में खाना-पीना और सफर का मजा लेना, कुछ ऐसा ही था। मेरे नानी के घर में एक बहुत ही लम्बा-तगड़ा खान रहता था जो देखने में बिल्कुल भालू के जैसा लगता था। इसलिए, हमलोग इसे प्यार से भोलू बुलाते थे। उन दिनों हमारे नानी के गाँव में अक्सर चोरी-डकैती होती रहती थी। ऐसा ही एक वाकया हमारे नानी के घर में भी हुई। रात को जब हम सभी लोग सो रहे थे तभी डकैती पड़ी। सबसे पहले उन लोगों ने भोलू को बांध दिया, और दिवाल में सेंध मारकर घर के अन्दर घुस गए। सबसे पहले बड़े मामा के घर में घुसे तथा मेरे ममेरे भाई सोनू को उठा लिया एवं उसके ऊपर बंदूक तान दी और घर के सभी सदस्यों को कहा कि जितने भी कीमती सामान हो, हमारे हवाले कर दिया जाए, अन्यथा सोनू की जान चली जाएगी।

सभी लोग इस बात से भयभीत होकर अपना-अपना कीमती सामान उन्हें सौंप दिये, इसी बीच किसी ने पूलिस को डकैती की खबर दे दी। इस बात की भनक डकैतों को भी हो गई। इसलिए जल्दबाजी में वह कीमती सामानों को और सोनू को लेकर भागने लगे। चूंकि उनके पास हथियार थे, इसलिए हमलोग सभी शान्त थे। लेकिन इसी बीच भोलू ने किसी तरह अपना बंधन तोड़कर उनका पीछा किया तथा उस व्यक्ति पर हमला किया जिसने सोनू को दबोच रखा था और उसे लहु-लुहान कर दिया। तभी डकैतों के एक साथी ने भोलू पर फायरिंग की। गोली भोलू को लगी और वह भी घायल हो गया किन्तु उसने हमला जारी रखा और सोनू को छुड़ाने में लगा रहा। तभी पुलिस वहाँ पहुँची, पुलिस को देखकर वे लोग सोनू को छोड़कर भाग गए। सोनू सही-सलामत पुलिस के पास पहुँच गया। कुछ देर में हम सभी लोग वहाँ पहुँचे तथा सोनू को सही-सलामत देखकर बहुत प्रसन्न हुए।

सभी लोग सोनू को लेकर ही व्यस्त थे, सहसा हमें यह पता चला कि हमारा प्यारा भोलू उस संघर्ष में मारा गया, पर कहना अनुचित नहीं होगा कि भोलू ने अपने जीवन के बदले सोनू की जान बचाई। इसी कारण आज भी मैं जब अपने नानी के यहाँ जाता हूँ तो भोलू की याद दिल की गहराइयों से बाहर आने का प्रयास करती हैं।

एक अच्छी पुस्तक हज़ार दोस्तों के बराबर होती है जबकि एक अच्छा दोस्त एक लाइब्रेरी (पुस्तकालय) के बराबर होता है। - ए.पी.जे.अब्दुल कलाम

समय को बीतें सालों में न मापकर, इस बात में मापा जाना चाहिए कि आपके द्वारा क्या हासिल किया गया है। - जवाहरलाल नेहरू

कंक्रीट के जंगल

श्री अनिल माझी
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी
समन्वय

खुला मैदान हो या संकरी गली हो
परित्यक्त तालाब हो या कुड़े से भरी नाली हो।
हर जगह एक ही कार्यक्रम "पौधारोपण"
जैसे 'हरियाली' विकसित करने की कोई योजना हो।
चार पाँच वर्षो में फलते-फूलते पौधे
चारों ओर हरियाली, लहलहाते छोटे बड़े पौधे।
जंगल के बीच, यातायात हेतु पगडंडियों के जाल
अनगिनत के बीच में सिर्फ अपना ही ख्याल?
रंग बिरंगे फूल भरमार पर खुशबु है नहीं
तरह-तरह के फल हैं, मगर रस-स्वाद नहीं
पगडंडियों पर बिछे हुए न सड़नेवाले पत्ते
किनारों से गुजरते जल-प्रवाह के अवरूद्ध रास्ते।
पौधे की अधिकता, अधिक होते उत्सर्जन
हवा-पानी का दूषण, कितना कर पाते परिशोधन
मूक "प्राणी", इशारों को समझना नहीं चाहते
कंक्रीट के जंगल में, प्लास्टिक के पत्ते।

मंजिल की ओर

अंकित कुमार मल्लिक
आंकड़ा प्रविष्टि संचालक/प्रशासन

है रात अधूरी सी,
कुछ बात अधूरी सी।
चलना है दूर तक,
पर है साथ अधूरी सी।।

चिरागों को हाथों में लिए,
अंजान रास्तों पर चले जा रहे हैं।
है जुर्रत हमारी बस इतनी,
आंधियों से लड़े जा रहे हैं।।

नामुमकिन सा है वहाँ पहुँचना,
फिर भी हमें चलते जाना है।
मंजिल की फिक्र किसको है अब,
गीत गुनगुनाते आगे वढ़ते जाना है।।

एक देश की महानता, बलिदान और प्रेम उस देश के आदर्शों पर निहित करता है।-सरोजनी नायडू

अनोखी गिनती 1 से 20 तक

कमलेश कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक/समन्वय

1. एक्के –नारायण।
2. दूजे–चाँद।
3. तीनों–लोक (आकाश, पाताल एंव धरती)।
4. चारों–वेद (ऋगवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद एंव सामवेद)।
5. पाँचों–पाण्डव (युध्दिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल एंव सहदेव)।
6. छवों–शास्त्र (न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा एवं वेदांत)।
7. सातों–सप्तऋषि(वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि, जमदग्नि, गौतम, विश्वामित्र एंव भरद्वाज)।
8. आठों–सिद्धि(अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति सिद्धि, प्राकाम्य सिद्धि, ईशिता एंव वशिता)।
9. नवों–निधि (पद्म निधि, महापद्म निधि, नील, मुकुंद, नंद, मकर, कच्छप, शंख एंव खर्व या मिश्र)।
10. दसों–दिशाएँ(उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम, उत्तर-पूरब, उत्तर-पश्चम, दक्षिण-पूरब, दक्षिण-पश्चिम, आकाश एंव पताल)।
11. ग्यारहों–रूद्र (शम्भू, पिनाकी, गिरीश, स्थाणु, भर्ग, भव, सदाशिव, शिव, हर, शर्व एंव कपाली)।
12. बारहों–मास
13. तेरहों–उपनिषद (इशावास्योपनिषद, केनोपनिषद, कठोपनिषद, प्रश्नोपनिषद, मुण्डकोपनिषद, मामडुक्योपनिषद, तैन्तरीयोपनिषद, ऐतरेयोपनिषद, छान्दोग्योपनिषद, बृहदारण्यकोपनिषद, श्वेताश्वतरोपनिषद, कौशितकी उपनिषद, मैत्रायणी उपनिषद)।
14. चौदहों–भुवन (भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपोलोक, ब्रह्मलोक-ये सभी लोक पृथ्वी से शुरू करते हुए ऊपर एंव अतल, वितल, सतल, रसातल, तलातल, महातल, पाताल-ये सभी लोक पृथ्वी से नीचे)।
15. पन्द्रहों–पखवाड़ा।
16. सोलहों–श्रृंगार(सिंदुर, बिंदी, काजल, मेंहदी, चूडियाँ, मंगलसूत्र, नथ, गजरा, मांगटिका, झुमके, बाजूबंद, कमरबंद, बिछिया, पायल, अँगुठी, स्नान)।
17. सत्रहों–सती।
18. अठारहों–पुराण (ब्रह्म पुराण,पद्म पुराण, विष्णु पुराण, वायु पुराण, भागवत पुराण, नारद पुराण, मार्कण्डेय पुराण, अग्नि पुराण, भविष्य पुराम, ब्रह्म वैवर्त पुराण, वाराह पुराण, स्कन्द पुराण, स्कन्द पुराण, वामन पुराण, कूर्म पुराण, मत्स्य पुराण, गरुङ पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण)।
19. उन्नीसे–कन्या।
20. बीसे–वर।

कष्ट और विपत्ति मनुष्य को शिक्षा देने वाले श्रेष्ठ गुण हैं। - चाणक्य

परिन्दों का सच

अंकित कुमार मल्लिक
आंकड़ा प्रविष्टि संचालक/प्रशासन

जिन्दगी एक कमरे में कैद हो गयी है,
परिन्दे वापस गाँव आ गये, जो कभी शहर गये थे।
दो वक्त की रोटी उन्हें कितना सताती है,
मजबूरी में ही उनको शहर का रास्ता दिखाती है।
पर जिन्दगी में जब मायूसी का मंजर आता है,
आखिरी उम्मीद बस अपना घर नजर आता है।
खेत-खलिहानों को याद कर वो वापस गाँव आते हैं,
एक नई जिन्दगी की सफर शुरु करना वो चाहते हैं।
तबाही के दौर में लगता सब कुछ झूठा है,
कहते है लोग कि उन्हें अपनों ने लूटा है।
वादा करते हैं खुद से वो कभी शहर ना जाऐंगे,
गाँव में सूखी ही सही सुकुन की रोटी खाऐंगे।
देखना है कब तक वो संकल्प निभाऐंगे,
परिन्दे कभी न कभी शहर को वापस जाऐंगे।

बड़ा डराए

पंकज कुमार
आंकड़ा प्रविष्टि संचालक/समन्वय

खून का प्यासा पर पिद्दी सा,
हवा में उड़ता जाए।
चुटकी में ही यूं मर जाता,
फिर भी बड़ा डराए।
स्वच्छ पानी हो बहुत पुराना,
गंद ढेर हो जाए।
ऐसी जगहों पर ही मच्छर,
अपना घर बनाए।
करो उपाय करो बचाव,
ना समझो इसे चंगू-मंगू।
ये काटे तो हो सकता है,
कभी किसी को डेंगु।

सच्ची राजनीति मानवीय प्रसन्नता को बढ़ावा देने के बारे में होती है। - जयप्रकाश नारायण

लड़ाई खुद से होती है दूसरों से नहीं। - चन्द्रशेखर आजाद

जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोपः मानवता की आंखें अतीत में

(16 जुलाई, 2022 अंग्रेजी अखबार से हिंदी रुपांतर)

संजय कुमार बोस
सहायक पर्यवेक्षक समन्वय

जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप की तस्वीरें, जो अंतरिक्ष और समय में दूर तक देखने के लिए बनाए गए $ 10 बिलियन टेलीस्कोप की क्षमताओं को दिखाती हैं, ब्रह्मांड के अब तक के बेहतरीन गुणवत्ता वाले दृश्य हैं। ब्रह्मांड के रहस्यों के जवाब के लिए मानवता की खोज एक बात साबित करती है - यह समझने की कोशिश करना कि कोई चीज़ कैसे काम करती है, इसकी सुंदरता में कोई कमी नहीं आती है, यह इसे बढ़ाता है।

इस सप्ताह (11/07/22) की शुरुआत में, नासा, यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी और कनाडाई अंतरिक्ष एजेंसी द्वारा निर्मित जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप (JWST) ने हमें ब्रह्मांड की अपनी पहली पांच छवियां भेजीं। हबल स्पेस टेलीस्कोप के उत्तराधिकारी, जिसे अप्रैल 1990 में लॉन्च किया गया था, JSWT ने ब्रह्मांड के शानदार दृश्यों को दिखाया जैसा कि हमने कभी नहीं देखा।

तस्वीरें, जो अंतरिक्ष और समय में दूर तक देखने के लिए बनाए गए $ 10 बिलियन टेलीस्कोप की क्षमताओं को दिखाती हैं, ब्रह्मांड के अब तक के बेहतरीन गुणवत्ता वाले दृश्य हैं। JSWT, अंतरिक्ष में भेजी गई अब तक की सबसे महंगी और जटिल वस्तुओं में से एक है, जिसे पिछले साल के अंत में कक्षा में स्थापित किया गया था।

जबकि हबल स्पेस टेलीस्कोप लगभग 570 किमी की ऊँचाई पर पृथ्वी की परिक्रमा करता है, JWST वास्तव में पृथ्वी की परिक्रमा नहीं करता है। इसके बजाय, यह पृथ्वी से 1.5 मिलियन किलोमीटर दूर सूर्य की परिक्रमा करता है, जिसे दूसरा लैग्रेंज बिंदु या L2 कहा जाता है, जिससे मानवता पहले से कहीं अधिक ब्रह्मांड में गहराई से देख सकती है।

नासा ने एक विज्ञप्ति में कहा, 'विशाल ब्रह्मांड का यह टुकड़ा जमीन पर किसी के द्वारा हाथ की लंबाई में रखे रेत के दाने के आकार के लगभग आकाश के एक टुकड़े को कवर करता है।'

JWST का लक्ष्य क्या है?

इसका उद्देश्य चार चीजों को पूरा करना है:

शोधकर्ताओं को यह समझने में सहायता करना कि बिग बैंग के बाद सबसे पहले सितारों और आकाशगंगाओं का निर्माण कैसे हुआ।

सुदूर अतीत की आकाशगंगाओं की वर्तमान आकाशगंगाओं से तुलना (मिशन के दूसरे चरण में) ब्रह्मांड के उन क्षेत्रों का अन्वेषण जहां तारे और ग्रह प्रणालियां बन रही हैं ताकि वैज्ञानिक उनका अध्ययन कर सकें।

जीवन के लिए आवश्यक तत्वों की खोज की आशा में हमारे सौर मंडल के बाहर ग्रहों के वायुमंडल का अध्ययन जैसा कि हम जानते हैं - ब्रह्मांड में कहीं और यह हमारे अपने सौर मंडल में वस्तुओं की भी जांच करेगा।

यह कब तक उपयोग में रहेगा?

नासा के अनुसार, वेब सुविधा के पास 10 से अधिक वर्षों तक संचालन जारी रखने के लिए संसाधन हैं। इसकी पांच साल की परिचालन अपेक्षा है लेकिन यह उतने तक सीमित नहीं है।

जेम्स वेब कौन थे?

जेम्स ई वेब फरवरी 1961 से अक्टूबर 1968 तक नासा के प्रशासक थे। नासा की वेबसाइट के अनुसार, वह सरकारी अधिकारी थे जिन्होंने विज्ञान में सबसे अधिक योगदान दिया, जिससे उन्हें अगली पीढ़ी के अंतरिक्ष दूरबीन का नाम रखने के लिए एक

उपयुक्त विकल्प माना गया।

आइए तस्वीरें देखते हैं-

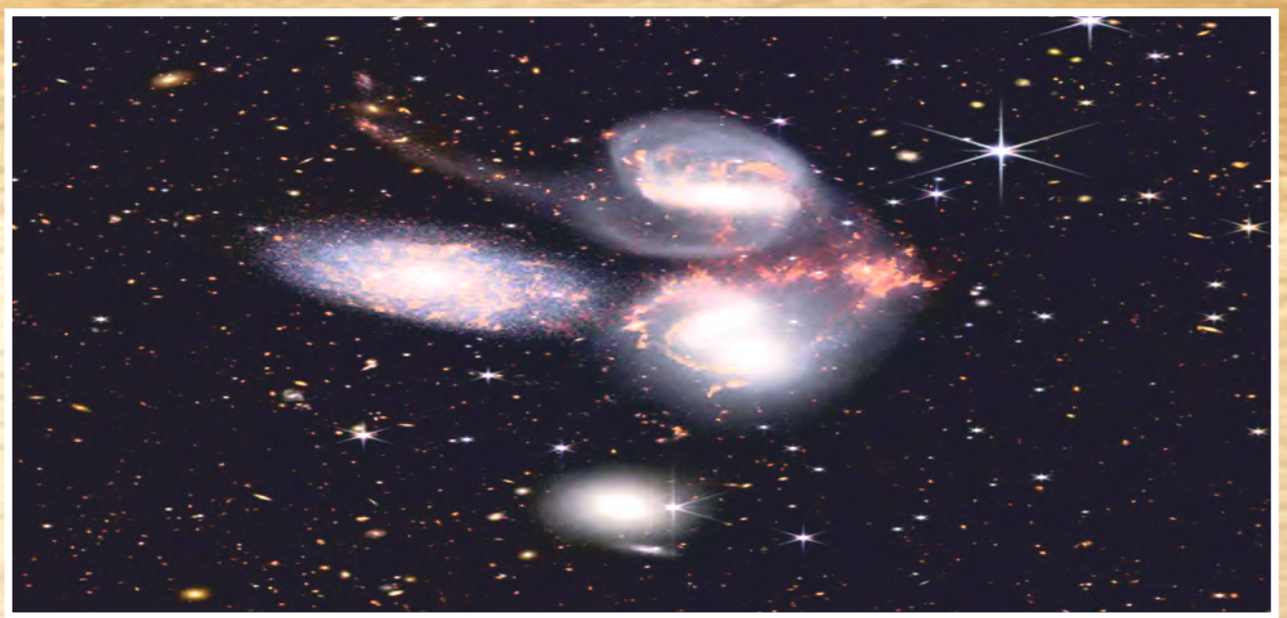

पांच आकाशगंगाओं की विषम परस्पर क्रिया को स्टीफ़न की पंचक में विस्तार से दर्शाया गया है, जिसकी खोज 1877 में फ्रांसीसी खगोलशास्त्री एडौर्ड स्टीफ़न ने की थी। अंतिम छवि, जो JWST से सबसे बड़ी है, लगभग 1,000 व्यक्तिगत छवियों से बनी है।

छवि में सूर्य से लगभग 24 मिलियन गुना द्रव्यमान वाला एक सुपरमैसिव ब्लैक होल देखा जा सकता है, जो सबसे ऊपरी आकाशगंगा के केंद्र में स्थित है।

दक्षिणी रिंग नेबुला: एक मरते हुए सितारे का अंतिम प्रदर्शन

'दक्षिणी वलय नेबुला' या NGC 3132 एक ग्रहीय नीहारिका है जिसे JWST ने देखा, जिससे शोधकर्ताओं को इस बारे में और जानकारी मिलती है कि सितारों के साथ क्या होता है क्योंकि वे अपने जीवन चक्र के अंत तक पहुंचते हैं। नासा ने इस नेबुला के दो साइड-बाय-साइड दृश्य प्रदर्शित किए, एक को निकट-अवरक्त प्रकाश (बाएं) में स्कोप के NIRCam का उपयोग करके और दूसरा JWST (दाएं) पर मध्य-अवरक्त सेंसर का उपयोग करके कैप्चर किया गया।

कैरिना नेबुला: गहरे अंतरिक्ष में एक पेंटिंग

कैरिना नेबुला में एनजीसी 3324 नामक एक पास के, युवा स्टार-फॉर्मिंग क्षेत्र का किनारा है, जो चमकते सितारों से अटे 'पहाड़ों' और 'घाटियों' का यह पैनोरमा जैसा दिखता है। जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कॉप के इन्फ्रारेड कैमरे ने इस छवि को कैप्चर किया, जो पहली बार स्टार जन्म के दृश्य क्षेत्रों को दिखाता है जो पहले अनदेखे थे।

कॉस्मिक क्लिफ्स के रूप में जाना जाता है, वेब की छवि दर्शाती है कि चांदनी रात में चट्टानी पहाड़ क्या दिखाई देते हैं। इस छवि में सबसे बड़ी 'शिखर', जो लगभग सात प्रकाश-वर्ष ऊंची हैं, वास्तव में NGC 3324 के भीतर विशाल, गैसीय गुहा की सीमा हैं।

दो वेधशालाओं के बीच सबसे महत्वपूर्ण अंतर उनकी अत्यधिक भिन्न इमेजिंग क्षमताएं हैं।

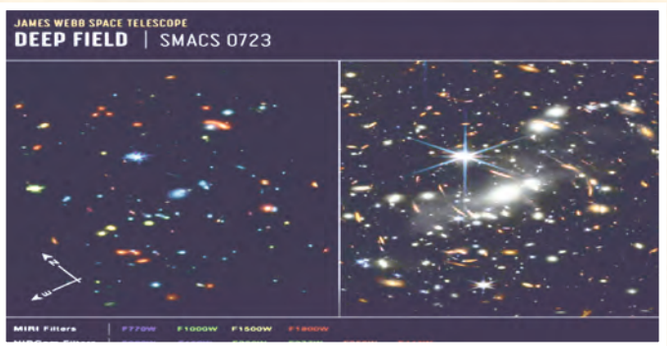

मानव आंखों के लिए दृश्यमान तरंग दैर्ध्य पर प्रकाश को सर्वोत्तम रूप से पकड़ने के लिए, हबल टेलीस्कोप को ऑप्टिकल स्पेस वेधशाला के रूप में बनाया गया था। लेकिन जब सुदूर ब्रह्मांड को देखने की बात आई तो यह एक खामी साबित हुई।

चूंकि ब्रह्मांड का विस्तार हो रहा है, और इस विस्तार की दर बढ़ रही है, दूरबीन कैमरों द्वारा कैप्चर की गई वस्तुएं रेडशिफ्ट के रूप में जानी जाने वाली घटना के अधीन हैं, जिसमें वे जो प्रकाश उत्सर्जित करते हैं, वह स्पेक्ट्रम के लाल छोर की ओर लंबी तरंग दैर्ध्य तक फैला होता है। आखिरकार, यह इन्फ्रारेड हो जाता है और इस प्रकार मानव आंखों के लिए अदृश्य हो जाता है।

JSWT को इन्फ्रारेड छवियों को भी कैप्चर करने में सक्षम बनाकर इस मुद्दे को हल करने के लिए डिज़ाइन किया गया था।

इसके अतिरिक्त, JWST का दर्पण हबल की तुलना में बहुत बड़ा है, जिसका अर्थ है कि यह अंतरिक्ष में और भविष्य में और तथा अतीत में देख सकता है।

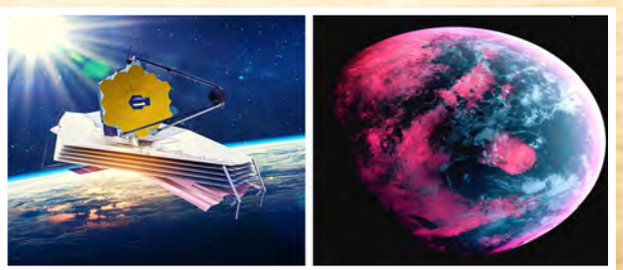

पर्यटन उद्योग और भारत

संजीव कुमार सिंह
वरिष्ठ अनुवादक

पर्यटन आज विश्व के सबसे प्रमुख उद्योग में से एक के रूप में स्थापित हो रहा है। भारत के सन्दर्भ में देखें तो यहाँ की प्राकृतिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहर, उसे पर्यटन की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण क्षेत्र बनाती है। आज भारत विभिन्न श्रेणी के पर्यटन के लिए जाना जाता है, जैसे कि साहसिक पर्यटन (Adventure tourism) चिकित्सा पर्यटन, पारिस्थिति की पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन, इत्यादि।

ज्ञातव्य है कि भारत में कश्मीर से कन्याकुमारी तक, अरुणाचल प्रदेश से गुजरात तक के प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्टता और संस्कृति है। ये क्षेत्र अपने ठंड / गर्म रेगिस्तान (लद्दाख / राजस्थान), नदियों (गंगा और ब्रह्मपुत्र), वन (निलिगिरि और उत्तर पूर्व), द्वीपों (अंडमान और निकोबार), पर्वत व पठारों आदि प्राकृतिक विशेषताओं से पर्यटकों को आकर्षित करने की क्षमता रखते हैं। साथ ही यहाँ के परिदृश्य में पाये जाने वाले व्यापक विविधता और सांस्कृतिक विरासत विदेश से आने वाले पर्यटकों के लिए कई विकल्प प्रदान कर रहे हैं।

आज भी विश्व के कुछ देशों में (जैसे-श्रीलंका, नेपाल, भूटान, म्यांमार आदि) जहाँ हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म के अनुयायी बड़ी संख्या में रहते हैं। गौरतलब है कि इन धर्मों के प्रवर्त्तक का जन्मस्थली होने के कारण बड़ी संख्या में यहाँ पवित्र और धर्मिक पर्यटन स्थल हैं, जिससे दक्षिण पूर्व और पूर्वी एशियाई देशों के पर्यटक काफी संख्या में आकर्षित हो रहे हैं।

भारत में पर्यटन की वर्तमान स्थिति

वर्ल्ड ट्रेवल एण्ड टूरिज्म कांउसिल (डब्ल्यूटीटीसी), 2018 की रिपोर्ट में भारत को पर्यटन के मामले में विश्व में तीसरा स्थान मिला है। इस रिपोर्ट में 185 देशों के पिछले सात वर्षों (2011-2017) के प्रदर्शन पर अवलोकन किया गया था। इस रिपोर्ट के चार मुख्य आधार थे-

- सकल घरेलू उत्पाद में कुल योगदान
- अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन खर्च
- घरेलू पर्यटन खर्च एवं
- पूँजी निवेश

इन चार स्तरों पर अपना स्थान ऊपर उठा पाने की दृष्टि से यह भारत के लिए एक बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है। वर्ष 2017 में, पर्यटन से भारत ने लगभग 23 अरब डॉलर का राजस्व अर्जित किया जिसे 2023 तक 100 अरब डॉलर करने का लक्ष्य रखा गया है। यह फ्रांस और स्पेन की तुलना में अधिक है। उल्लेखनीय है कि 2017 में भारत में 1.4 करोड़ विदेशी पर्यटक आए थे जबकि 2014 में यही आँकड़ा 76.8 लाख था। इस लिहाज से भारत में पर्यटन के मोर्चे पर 14 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि दर्ज की गई जो वैश्विक औसत 6.8 प्रतिशत और एशियाई औसत 5.7 प्रतिशत से काफी अधिक है। हालांकि घरेलू पर्यटन की वृद्धि महज 2.3 प्रतिशत रही। सकल घरेलू उत्पाद में पर्यटन का योगदान 7 प्रतिशत रहा।

विश्व आर्थिक मंच के अनुसार पर्यटन से जुड़े प्रतिस्पर्द्धात्मक सूचकांक में पिछले चार वर्षों में भारत ने 25 स्थान ऊपर की छलांग लगाई है। इसका श्रेय सरकार के उन प्रयासों को जाता है, जिनके कारण भारत में विदेशी और घरेलू यात्रियों की संख्या बहुत बढ़ गई है।

घरेलू पर्यटन

- घरेलू पर्यटन दौरों में वृद्धि दर 2016 में 12.7 प्रतिशत से घटकर 2017 में 2.4 प्रतिशत रह गई है।
- वर्ष 2016 में 1,615.4 मिलियन की तुलना में 2017 में घरेलू पर्यटकों की कुल संख्या 1652.5 मिलियन थी।
- शीर्ष 5 गंतव्य राज्य तमिलनाडु (345.1 मिलियन), उत्तर प्रदेश (234 मिलियन), कर्नाटक (180 मिलियन), आंध्र प्रदेश (165.4 मिलियन) और महाराष्ट्र (119.2 मिलियन) जो 2017 में घरेलू पर्यटन दौरे की कुल संख्या के 63.2 प्रतिशत बैठता है।
- केन्द्रीकृत रूप से संरक्षित प्रवेश टिकट वाले स्मारकों में से घरेलू पर्यटक के लिए 2017-18 में सबसे ज्यादा बार देखे गए स्मारकों में ताज महल, आगरा (5.66 मिलियन) सूर्य मंदिर, कोणार्क (3.22 मिलियन) और लाल किला, दिल्ली (3.04 मिलियन) रहे।

भारत में पर्यटन उद्योग की महत्ता

- वैश्विक स्तर पर पर्यटन एक बड़ा उद्योग है। यह कई क्षेत्रों में रोजगार के अवसर सृजित करता है साथ ही अर्थव्यवस्था को तेजी से बढ़ाने में मदद करता है। इसके महत्व का अनुमान केवल इस तथ्य से ही लगाया जा सकता है कि विश्वभर में पर्यटकों की संख्या वर्ष 1950 के 2.5 करोड़ की तुलना में वर्ष 2016 में 123 करोड़ हो गई है।
- स्मरणीय हो कि वर्ष 2014 में वैश्विक अर्थव्यवस्था में पर्यटन की हिस्सेदारी 9.4 प्रतिशत थी। वहीं मॉरीशस, सिंगापुर और दुबई जैसी जगहों पर जीडीपी में योगदान के लिहाज से पर्यटन उद्योग दूसरे स्थान पर रहा।
- आँकड़ों की बात करें तो पर्यटन क्षेत्र में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष तौर पर करीब 4.27 करोड़ लोगों को रोजगार मिला हुआ है। फिक्की की तरफ से जारी एक हालिया रिपोर्ट के अनुसार, इस साल भारत को ट्रैवल और टूरिज्म क्षेत्र में 10 लाख नौकरियाँ मिलने का अनुमान है।
- रिपोर्ट के अनुसार, 2029 तक हर साल इस सेक्टर में 10 लाख नौकरियाँ सृजित होने का अनुमान है। साल 2019 के अंत तक भारत में इस क्षेत्र का कारोबार बढ़कर 35.40 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचने की उम्मीद है, जो पिछले साल 17 लाख करोड़ रुपये के आसपास रहा था।
- गौरतलब है कि ट्रेवल और टूरिज्म इंडस्ट्री में आए उछाल के बाद से पिछले पांच-छह सालों में आतिथ्य क्षेत्र (Hospitality Sector) ने भी काफी प्रगति की है।
- पर्यटन से भारत में महिलाओं के लिए भी रोजगार के तमाम अवसरों की खिड़की खुली है।
- विदित हो कि वैश्विक स्तर पर अन्य क्षेत्रों के मुकाबले पर्यटन क्षेत्र में लगभग दोगुनी संख्या में महिलाएँ कार्यरत हैं। इस दृष्टि से पर्यटन क्षेत्र समाज में समानता तथा सामाजिक न्याय को समर्थन देने का भी माध्यम रहा है।
- आज भारत का पर्यटन उद्योग अपने पारंपरिक दायरों से निकलकर चिकित्सा और योग जैसे क्षेत्रों में फैल रहा है। नतीजतन भारत के लिए नई संभावनाओं व अवसरों का द्वारा खुला है।

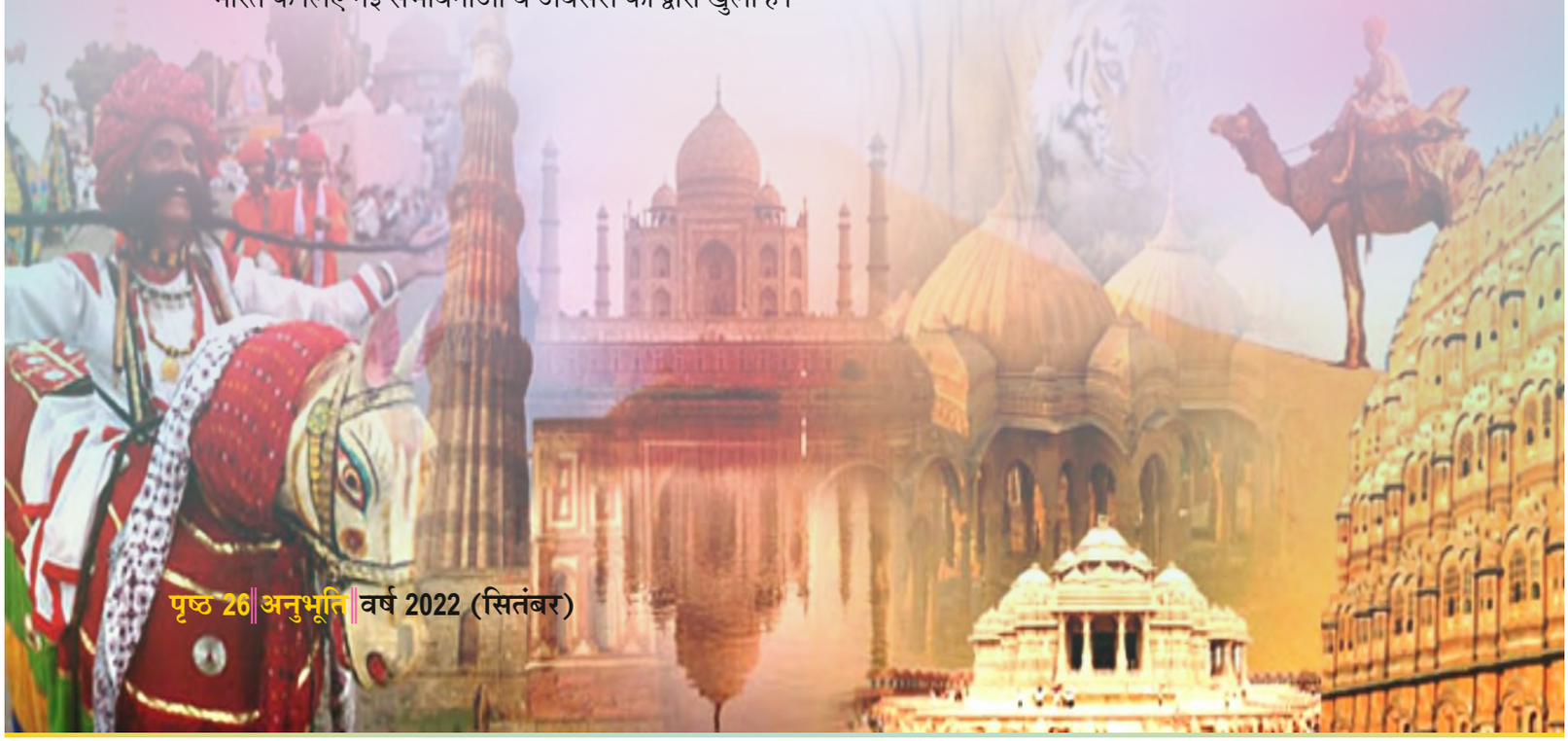

सरकारी प्रयास

भारत की विशाल भौगोलिक संरचना तथा समृद्ध ऐतिहासिक विरासत के कारण यहाँ पर्यटन क्षेत्र के विकास की पर्याप्त संभावनाएँ हैं। इन्हीं कारणों से भारत सरकार द्वारा इस क्षेत्र में सुधार हेतु कई योजनाओं को लागू किया गया है। इन प्रयासों को निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत देखा जा सकता है-

- देश में पर्यटन सर्किट के विकास हेतु 'स्वदेश दर्शन योजना', विरासत स्थलों के विकास हेतु 'हृदय' योजना तथा धार्मिक पर्यटन स्थलों के विकास हेतु 'प्रसाद' योजना लाई गई है। इसके अलावा पर्यटन स्थलों पर रोप-वे के निर्माण तथा रेलवे स्टेशनों और लॉजिस्टिक पार्कों के आसपास की वाणिज्यिक भूमि के विकास पर बल दिया गया है।
- विदेशी पर्यटकों के आगमन को सरल बनाने पर बल देते हुए सरकार ने 166 देशों के लिए ई-वीजा व्यवस्था की शुरूआत की है। विदित हो कि इसकी अगली कड़ी के रूप में हाल ही में हुए मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में पर्यटन मंत्रालय द्वारा ई-वीजा (इलेक्ट्रॉनिक वीजा) शुल्क में कमी का प्रस्ताव किया गया है।
- प्रस्तावित योजना के अनुसार, एक नए 5-वर्षीय वीजा योजना की घोषणा की गई और ई-वीजा शुल्क को अल्पकालिक के साथ ही दीर्घकालिक पर्यटक ई-वीजा योजना के विकल्प के साथ रखा गया है।
- उल्लेखनीय है कि इस दिशा में आगे बढ़ते हुए सरकार ने कुछ समय पूर्व अंडमान निकोबार द्वीप समूह में विदेशियों को पहुँच के 24 घंटे के अंदर, विदेशी पंजीकरण कार्यालय में पंजीकरण करने की बाध्यता को समाप्त किया है।
- पर्यटन मंत्रालय विदेशियों को आकर्षित करने के लिए पूर्वोत्तर जैसे क्षत्रों का भी इस प्रकार से विकास कर रहा है कि वे सुगम, सुरक्षित और आकर्षक स्थल बन सकें।
- परंतु यह भी तथ्य है कि भारत को अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को उजागर करने में वैसी सफलता नहीं मिली है जैसा कि पश्चिम के देशों, विशेषकर यूरोपीय देशों को मिली है।
- स्वास्थ्य पर्यटन, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, साहसिक पर्यटन में अपार संभावनाओं के होते हुए भी इन क्षत्रों पर ध्यान कम दिया गया है।
- हालाँकि योग, प्राकृतिक चिकित्सा और साहसिक पर्यटन में निजी क्षेत्र के लोग अच्छी कमाई कर रहे हैं लेकिन राज्य सरकारें इनको एक सूत्र में बाँधकर लाभ नहीं उठा पाई हैं। कुछ काम तो चल रहे हैं लेकिन बड़ी मंद गति से। मसलन 40 हेलिपैड बनना प्रस्तावित हैं किंतु चंद गिने चुने पर ही काम हो पाया है।
- चारधाम यात्र मार्ग को बीते साल की आपदा के बाद पर्याप्त बजट के बावजूद अभी तक वाहनों के लिए सुविधाजनक नहीं बनाया जा सका है। वही ट्रैकिंग के लिए कई सालों से नए मार्ग नहीं बनाए जा सके हैं आदि।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पर्यटन क्षेत्र में विकास के लिए सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयास सराहनीय हैं। वर्तमान में पर्यटन से जुड़ी चुनौतियों से निपटने के लिए निम्नलिखित कुछ प्रमुख सुझावों को अमल में लाया जा सकता है-

- सरकार को पर्यटन क्षेत्र के समस्त विकासके लिए समावेशी विकास के मुख्य चालक के रूप में कार्य करने की क्षमता वाले निजी क्षेत्र की भागीदारी को एक बड़े पैमाने पर प्रोत्साहित करना चाहिए।
- केंद्र एवं राज्य सरकारों के अलावा निजी क्षेत्र के बीच बेहतर जुड़ाव की जरूरत है। इन सबसे बढ़कर पर्यटकों की सुरक्षा सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
- यह अच्छा संकेत है कि मौजूदा सरकार ने 2014 में ही इसकी संभावनाएं पहचानकर पांच वर्षों के दौरान इस मोर्चे पर काफी काम किया है, जिसे निरंतर गति देना आवश्यक है।
- 'अतुल्य भारत' और 'अतिथि देवो भवः' जैसे स्लोगनों को व्यापक योजनाओं के साथ प्रचारित करना चाहिए। इसके तहत बड़ी संख्या में किफायती होटलों का निर्माण, मनोरंजन के लिए भी नये किस्म के विकल्प तैयार किये जाने चाहिए।
- अधिक-से-अधिक पर्यटकों को आकर्षित करने के लिये एडवेंचर टूरिज्म (Adventure Tourism) पर भी फोकस किया जाना चाहिए।
- पर्यटन विकास के मामले में देश के कुछ राज्यों को छोड़कर अन्य राज्यों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। ऐसे में पर्यटन के जरिए आर्थिक विकास को गति देने वाले राज्यों से सबक लिया जाना चाहिए।
- पर्यटन के पुराने केंद्र ही राज्यों की आय का माध्यम बने हैं, जबकि अपार संभावनाओं वाले पर्यटन स्थल आज भी पर्यटकों

की जानकारी में नहीं हैं। यदि उत्तराखंड का आकलन किया जाए तो पर्यटन के मामले में राज्य ने पिछले दस वर्ष में कोई ख़ास उपलब्धि हासिल नहीं की है। जबकि राज्य में बहुआयामी पर्यटन की संभावनाएँ मौजूद हैं। इसको लेकर योजना बनायी जानी चाहिए।

- उड़ान (UDAN) योजना को ज्यादा से ज्यादा हवाई अड्डों तक बढ़ाया जाना चाहिए। इसके लिए निजी क्षेत्र को इसे बेहतर बनाने में मदद करनी चाहिए।
- सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India-AS) की सहायता से अपने धरोहर स्थलों के लिये प्रस्ताव बनाते समय यूनेस्को (UNESCO) के मानकों का पालन सुनिश्चित करना चाहिए।
- राज्य सरकार को चाहिए कि वह हर वर्ष अपने यहाँ पर्यटकों के बढ़ रहे रुझानों को देखते हुए अपने सभी स्थलों को चरणबद्ध तरीके से विकसित करें और अपने स्तर पर निधि भी जुटाए।
- महानगरों से पर्यटन स्थलों तक कनेक्टिविटी हमारी पर्यटन संख्या को दोगुना करने और समग्र विकास में योगदान देने में काफी कारगर हो सकती है। ऐसे में इसे बढ़ाया जाना चाहिए। साथ ही धार्मिक स्थलों को पर्यटन विभाग की वेबसाइट पर अपलोड किया जाना चाहिए।
- इसके अलावा सरकार को विश्व में भारतीय योग, चिकित्सा, संस्कृति, विचारधारा, दुर्गम क्षेत्रों जैसे-पर्वत, पठार, झील नदियों आदि की सुंदरता से विश्व को अवगत कराना चाहिए।

पर्यावरण संरक्षण

नसीम नज़र
लेखापरीक्षक/प्रशासन

पर्यावरण में वह सभी प्राकृतिक संसाधन शामिल हैं जो कई तरीकों से हमारी मदद करते हैं तथा चारों ओर से हमें घेरे हुए हैं। यह हमें बढ़ने तथा विकसित होने का बेहतर माध्यम देता है, यह हमें वह सब कुछ प्रदान करता है जो इस ग्रह पर जीवन यापन करने हेतु आवश्यक है। हमारा पर्यावरण भी हमसे कुछ मदद की अपेक्षा रखता है जिससे की हमारा लालन पालन हो, हमारा जीवन बना रहे और कभी नष्ट न हो। तकनीकी आपदा के वजह से दिन प्रतिदिन हम प्राकृतिक तत्व को अस्वीकार रहे हैं ।
पृथ्वी पर जीवन बनाए रखने के लिए हमें पर्यावरण के वास्तविकता को बनाए रखना होगा। पूरे ब्रम्हांड में बस पृथ्वी पर ही जीवन है। वर्षों से प्रत्येक वर्ष 05 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए तथा साथ ही पर्यावरण स्वच्छता और सुरक्षा के लिए दुनिया भर में मनाया जाता है। पर्यावरण दिवस समारोह के विषय को जानने के लिए, हमारे पर्यावरण को किस प्रकार सुरक्षित रखा जाये तथा हमारे उन सभी बुरी आदतों के बारे में जानने के लिए जिस से पर्यावरण को हानि पहुंचता है, हम सभी को इस मुहिम का हिस्सा बनना चाहिए ।

धरती पर रहने वाले सभी व्यक्ति द्वारा उठाए गए छोटे कदमों के माध्यम से हम बहुत ही आसान तरीके से पर्यावरण को सुरक्षित कर सकते हैं। हमें अपशिष्ट की मात्रा में कमी करना चाहिए तथा अपशिष्ट पदार्थ को वही फेकना चाहिए जहां उसका स्थान है। प्लास्टिक बैंग का उपयोग नही करना चाहिए तथा कुछ पुराने चीजों को फेकने के बजाय नये तरीके से उनका उपयोग करना चाहिए।

पर्यावरण प्रदूषण

धरती पर जीवन के लालन पालन के लिए पर्यावरण प्रकृति का उपहार है। वह प्रत्येक तत्व जिसका उपयोग हम जीवित रहने के लिए करते हैं वह सभी पर्यावरण के अन्तर्गत आते हैं जैसे - हवा, पानी प्रकाश, भूमि, पेड़, जंगल और अन्य प्राकृतिक तत्व। हमारा पर्यावरण धरती पर स्वस्थ जीवन को अस्तित्व में रखने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। फिर भी हमारा पर्यावरण दिन-प्रतिदिन मानव निर्मित तकनीक तथा आधुनिक युग के आधुनिकरण के वजह से नष्ट होता जा रहा है। इसलिए आज हम पर्यावरण प्रदूषण जैसे सबसे बड़े समस्या का सामना कर रहे हैं।

सामाजिक, शारीरिक, आर्थिक, भावनात्मक तथा बौद्धिक रूप से पर्यावरण प्रदूषण हमारे दैनिक जीवन के विभिन्न

पहलुओं को प्रभावित कर रहा है। पर्यावरण प्रदूषण वातावरण में विभिन्न प्रकार के बीमारियों को जन्म देता है, जिसे व्यक्ति जीवन भर झेलता रहता है। यह किसी समुदाय या शहर की समस्या नहीं है बल्कि दुनिया भर की समस्या है तथा इस समस्या का समाधान किसी एक व्यक्ति के प्रयास करने से नहीं होगा। अगर इसका निवारण पूर्ण तरीके से नहीं किया गया तो एक दिन जीवन का अस्तित्व नहीं रहेगा। प्रत्येक आम नागरिक को सरकार द्वारा आयोजित पर्यावरण आन्दोलन में शामिल होना होगा।

पर्यावरण संरक्षण

हम सभी को अपनी गलती में सुधार करना होगा तथा स्वार्थ पर तात्याग कर पर्यावरण को प्रदूषण से सुरक्षित तथा स्वस्थ करना होगा। यह मानना कठिन है, परन्तु सत्य है की प्रत्येक व्यक्ति द्वारा उठाया गया छोटा सकारात्मक कदम बड़ा बदलाव कर सकता है तथा पर्यावरण गिरावट को रोक सकता है। वायुत था जल प्रदूषण द्वारा विभिन्न प्रकार के रोग तथा विकार का जन्म होता है जो हमारे जीवन को खतरे में डालते हैं।

पर्यावरण प्रदूषण के प्रभाव

आज के समय में किसी भी चीज को स्वास्थय के दृष्टी से सही नहीं कहा जा सकता, जो हम खाना-खाते हैं वह पहले से कृत्रिम उर्वरक के बुरे प्रभाव से प्रभावित होता है, जिसके फलस्वरूप हमारे शरीर की रोग प्रतिरक्षा क्षमता कमजोर होती है जो की सुक्ष्म जीवों से होने वाले रोगों से लड़ने में शरीर को सहायता प्रदान करता हैं। इसलिए, हममें से कोई भी स्वस्थ और खुश होने के बाद भी कभी भी रोग ग्रस्त हो सकता है। मानव जाति द्वारा शहरीकरण और औद्योगीकरण के आन्दोलन ने चिकित्सा, उद्योग तथा सामाजिक क्षेत्र को विकसित किया परन्तु प्राकृतिक परा दृश्य को कंक्रीट ईमारतों तथा सड़कों में तबदील कर दिया। भोजन तथा पानी के लिए प्रकृति परादृश्यों पर हमारी निर्भरता इतनी अधिक है की हम इन संसाधनों की रक्षा किए बिना जीवित नहीं रह सकते हैं।

शहरीकरण, औद्योगीकरण तथा हमारा प्रकृति के प्रति व्यवहार इन सब कारणों के वजह से पर्यावरण प्रदूषण विश्व की प्रमुख समस्या है तथा इसका समाधान प्रत्येक के निरंतर प्रयास से ही संभव है। हमें विश्व पर्यावरण दिवस के मुहिम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए।

ऑनलाईन शिक्षा बच्चों पर कितना प्रभावी

शाल्मली हांसदा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक प्रशासन

कोविड-19 जैसी महामारी के खतरे को देखते हुए और लॉकडाउन के कारण कई महीनों से बच्चों की स्कूल बंद है। हालांकि अब लॉकडाउन खत्म हो चुका है। फिर भी बच्चें ऑनलाईन क्लासेस कर रहे हैं। ऑनलाईन क्लासेस ने देश में पढ़ाई के क्षेत्र में एक नया रास्ता खोल दिया। जहां एक और इसके फायदे हैं वहीं इसके नुकसान भी हैं। तो पहले हम इसके फायदे के बारे में बात करते हैं।

समय की बचतः

इन क्लासेस के कारण बच्चों को स्कूल आने जाने में जो समय लगता था वह समय बच रहा है। कई बच्चे पढ़ने के लिए अपने घरों से बहुत दूर स्कूल जाते हैं। और समय कम होने के वजह से वह ज्यादा कार्य नहीं कर पाते हैं। ऑनलाईन क्लासेस से अब उनके पास इतना समय होता है कि वह अपनी रुची की चीजों में अपना ध्यान लगा सके।

जानकारीः

बच्चे वीडियो चैट से क्लास कर रहे हैं, जिससे वह तकनीकी तौर पर निपुण हो रहें हैं। यही वजह है कि आज की तारीख में तकरीबन सभी बच्चों को गैजेट की अच्छी खासी जानकारी है कि आज की तारीख में ऑनलाईन से जुड़ी नई-नई चीजें जानने की ललक बढ़ रही है। ऑनलाईन क्लासेस से टीचरों ने भी पढ़ाने का नया तरीका सीखा है और बच्चों को पढ़ाने और पढ़ाई के प्रति रुचि बढ़ाने के नए रास्ते ढूढ़े हैं।

बचतः

ऑनलाईन क्लास से पैरेन्टस की जेब का बाझ थोड़ा कम हुआ है। ट्रेवलिंग में खर्च होने वाले पैसों की बचत हो रही है। इस तरह से पैरेन्टस अब अपने बच्चों के लिए ऑनलाईन क्लासेस के बारे में भी सोच रहे हैं। अब वो अपने बच्चों को महंगे कोचिंग सेंटर नहीं भेजना चाहते।

ऑनलाईन क्लास के नुकसान

परिवेश ना मिलनाः

जिस तरह का परिवेश हमें स्कूल कॉलेज या कोचिंग सेंटर पर मिलता है, जहां हम दूसरों के सम्पर्क में रहते हुए कुछ सीखते हैं, और हमें गहरे तौर पर प्रभावित करते हुए कुछ सिखाता है, वैसा परिवेश हमें ऑनलाईन क्लासेस से नहीं मिलता है।

स्वास्थ पर असरः

इस समय ज्यादातर बच्चें ऑनलाईन क्लास ले रहे हैं ताकि स्कूल बंद होने पर पढ़ाई न रुके। कंप्यूटर पर पढ़ाई करने का असर बच्चों की आखों पर पड़ रहा है। जो कि चिंता का सबब बनता जा रहा है।

कोरोना का असर बच्चों की पढ़ाई पर भी पड़ा है। अब स्कूल में क्लासरुम की बजाय घर पर कंप्यूटर या लैपटॉप पर बच्चों को शिक्षा दी जा रही है।

इस वजह से बच्चों के साथ-साथ शिक्षकों और माता-पिता की आँखों पर कंप्यूटर स्क्रीन की लाइट का बुरा असर पड़ रहा है। ऑनलाईन क्लास की वजह से बच्चों का स्क्रीन टाइम काफी बढ़ गया है। जिसकी वजह से कई पैरेंटस की नींद उड़ गई है। हांलाकि, कुछ सावधानियां बर्त कर आप अपने बच्चे की आँखों को प्रोटेक्ट कर सकते हैं।

अगर बच्चे कम रोशनी में स्क्रीन पर देखते हैं तो इससे आँखों का ज्यादा बुरा असर पड़ता है। और आगे चलकर कई परेशानियाँ उठानी पड़ती है।

गुलिस्तां

संपादक

‘मेरी घुट्टी में पड़ी थी हो के हल उर्दू जबाँ
जो भी मैं कहता गया हुस्न-ए-बयाँ बनता गया’ - ‘फ़िराक़’

शहरे-दिल्ली से हमें और क्या लेना था
अपनी साँसों के लिए ताज़ा हवा मांगी थी - ज़ुबैर रिज़वी

सुलगते दश्त, रेत और बबूल थे हर एक सू
नगर नगर, गली गली गुलाब लिख रहे थे हम -अज़ीज़ नबील

पढ़ते फिरेंगे गलियों में इन रेख़्तों को लोग
मुद्दत रहेंगी याद ये बातें हमारीयाँ - मीर

नफ़रतों की इक दहकती आग है चारों तरफ
मैं फ़साद-ए-शहर के जलते हुए मंजर में हूँ - ज़फ़र कलीम

दैर नहीं हरम नहीं दर नहीं आस्ताँ नहीं
बैठे हैं रहगुजर पे हम ग़ैर हमें उठाए क्यों - मिर्जा गालिब

‘बाहर से कोई दरवाज़ा बंद कर दे तो ये कितनी अप्रिय स्थिति है,
लेकिन उससे भी अप्रिय, मुझे लगता है, वो स्थिति है जब दरवाज़ा अंदर से बंद हो।’ - वर्जीनिया वुल्फ़

उन गुलामों को आजाद करना मुश्किल है
जो अपनी जंजीरों की इज्जत करते हैं! - वाल्टेयर

वनमानुषों और हम मनुष्यों में भेद वस्तुतः उस अदृश्य धागे से है, जो विशाल जन समूहों, परिवारों और यूथों को बाँधे रखता है। इस धागे ने ही हमें सृष्टि का स्वामी बनाया है।

(सेपियंस:ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ ह्यूमनकाइंड-युवाल नोआ हरारी)

ऑडिट टूर

राज आनंद साह
सहायक लेखा-परीक्षा अधिकारी

मैं चला, मैं चला, कभी ट्रेन से, कभी प्लेन से।
कभी ऑडिट के काम से, कभी शिकायत जांच के नाम से,
मैं चला, मैं चला, कभी ट्रेन से, कभी प्लेन से।
अपनी बच्ची की मुस्कान लिये, दिल में अपनी जान लिये,
ढेर सारा साजो-सामान लिये, साथ में आफिस का फरमान लिये,
मैं चला, मैं चला, कभी ट्रेन से, कभी प्लेन से।
संवैधानिक, सी.ए.जी. का पद है, डी.पी.सी.एक्ट हमारी हद है,
परिवार और ऑडिट टूर के बीच चलाती रहती जद्दोजहद है।
पूरे विश्व में सी.ए.जी. का सुनाम है, घूम-घूम कर,
ऑडिट करना ही हमारा काम है, तथ्यपूर्ण, सच और
निष्पक्ष ऑडिट रिपोर्ट हो संसद में प्रस्तुत,
बस यही हमारा एकमात्र प्रयत्नशील ईनाम है।
हमारे ऑडिट रिपोर्ट पर कंपनी के शेयरधारकों का विश्वास है,
गिरती है सरकारें, और गिरता है सेंसेक्स भी, हमारे
रिपोर्ट से, यह अनुभूति ही कुछ खास है।
अतः मैं चला, मैं चला, कभी ट्रेन से, कभी प्लेन से।

कृष्णा मैडम

नरेन्द्र कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्रशासन

मैं कृष्णा हूँ,
मेरे नाम का मतलब प्यार, शांति और सद्भाव होता है,
जो ज्योतिष अंक आठ के अनुसार,
आत्मनिर्भर, चालाक, प्रतिष्ठापालक एवं ऑफिस के लिए
टिकाऊ होता है।
मैं कृष्णा, सपनों से दूर हकीकत में जीती हूँ,
क्योंकि मैं बहुत ही प्रेक्टिकल होती हूँ।
कृष्णा नाम है सच्ची आंतरिक भावनाओं को व्यक्त
करने एवं विश्वास का,
मैं कृष्णा डी जी मैडम की ही असली सारथी हूँ,
मैं ही उनके पूरे वर्ष पतझड़, बसंत, बहार और
इस सेक्रेटरेट रूपी मंदिर की आरती हूँ।
मैं उनकी/डी जी मैडम की खास पर्सनल
सलाहकार हूँ,
उनकी बंजर ज़मीन जैसी खामोशी को तोड़ने के
लिए बारिशों की फुहार/बौछार हूँ।
मैं उनकी हंसी हूँ मैं उनकी खुशी हूँ
जब मैं ड्यूटी पर नहीं आऊँ तो,
मैं उनकी कमजोरी भी हूँ और उनकी मजबूती भी हूँ।
मैं भटकते हुए फाइलों की अंतिम
पनाहगार हूँ,
मैं कड़वाहट हूँ और मैं मिठास भी हूँ
क्योंकि डी जी मैडम की बहुत ही खास हूँ।
मैं सिरला, जॉय, सुमन, विवेक, सुनीता, शीतल
और डी जी ए (माइंस) की अनगिनत भाइयों/
बहनों की बड़ी दीदी हूँ,
अजी कह सकते हैं मैं बहुत ही भोली-
भाली और सीधी हूँ।
समझो तो आईटीए/एडमिन/को ओर्ड/रिपोर्ट सहित
सभी सेक्शनों की बचने/बचाने वाली
छुट्टियों की आस हूँ
मैं सारे भाइयों/बहनों को दुर्घटना से बचाने वाली
अंतिम आस हूँ
क्योंकि मैं डी जी मैडम की बहुत ही खास हूँ।
या कह सकते हैं फ़ाईल्स की अंतिम आस हूँ
मैं खुशियों के सागरों की पार हूँ,
मैं करतल ध्वनि से गूंज करने वाली
सूत्रधार हूँ।
मैं डी जी ए (माइंस) की एक खास पहचान हूँ,
मैं आप सभी के चेहरों की मुस्कान हूँ।
मैं मैडम का भरोसा हूँ, फिक्र हूँ और अनेक
पी डी, डी जी, डेप्युटी ए जी, सीएजी साहब के साथ
बिताए हुए पल का एक लम्हा हूँ,
पर आज अलविदा होते हुए महसूस कर रही
तन्हा हूँ।
मैं कोई फरिश्ता नहीं, इस सचिवालय का
अभिमान हूँ,
इतने वर्षों तक इस सचिवालय में आप
सभी का बढ़ाने वाली सम्मान हूँ।
डी जी मैडम का मैं दिल हूँ,
इतने दिनों तक उनके साथ रहने
से पहले एक हिस्सा थी,
अब होने जा रही एक किस्सा हूँ,
मैं डी जी ए (माइंस) की दो नैना और
एक कहानी हूँ,
थोड़ा सा बादल और थोड़ा सा
पानी हूँ।
मैं इस ऑफिस की किरायेदार हूँ,
अब मेरा लीज खत्म हो रहा है,
मैं खुश भी हूँ, मजबूर भी हूँ,
नहीं रुक सकती मैं,
अब मुझको जाना ही होगा।
कुछ फूल जो मेरे साथ खिले थे,
कुछ खिले हैं देखो कुछ टूट गए,

कुछ सजे हैं अब भी गुलदस्ते में,
कुछ दूर हुए, कुछ टूट भी गए।
कितने मौसम, कितने पतझड़,
हमने साथ बिताए देखो,
बारिश लू, बसंत में भी,
हम साथ-साथ मुस्कुराए देखो,
इन यादों की अब भरकर पिचकारी
अब आगे रंग जमाना होगा
खुश भी हूँ, मजबूर भी हूँ,
नहीं रुक सकती मैं अब मुझको जाना ही होगा।
मैं कभी फूल थी जिस बगिया का,
उसे बिन मेरे ही सजाना होगा।
आज जुदा जो हो रही हूँ,
पर दिल से जुदा न हो पाऊँगी,
जब भी गुज़रोगे राह से मेरी,
सच कहता हूँ बहुत याद आऊँगी,
जो प्यार मिला है तुम सबसे,
इस प्यार का मुझ पर कर्ज़ रहेगा,
मान-सम्मान मुझे मिला यहीं से,
मेरे यहाँ होने का मुझे हमेशा गर्व रहेगा।
पर जब भी पड़े ज़रूरत मेरी,
हल्की सी आवाज़ लगा लेना,
सो जाये अगर ज़मीर मेरा तो
झकझोर के इसे जगा लेना।
फिर से मैं यहीं खड़ी मिलूँगी,
इस प्यार का कर्ज़ निभाना होगा,
मैं कभी फूल थी जिस बगिया का,
उसे बिन मेरे ही सजाना होगा।

रूपावती और अक्षरा

अनुपम दास शर्मा
(सहायक पर्यवेक्षक)-प्रशासन

रूपावती मेरी सुबह की खोज की तरह है
निशि ने जाल तोड़कर दिल पर लगा लिया है
वसंत का रहस्योद्घाटन, रविवार का पाठ
इस खोज में मैं खामोश खिड़की में रहता हूँ
वह जानता है कि मेरी धड़कन तेज हो रहा है
चुपके से उसकी तस्वीर से बात कर रही है।

निशिभंगा हरी घाटी में

मैं झील के पास टहल रहा था
जब कल्लोलिनी शहर की नीरस सुगंध
बिखेरती थी
ओस अभी भोर की उम्र तक नहीं पहुंची है
फिर भी नंदिनी नहीं आई
मुझे ऊपर कबूतरों के पंख
दिखाई देते हैं
उनके पंखों का फड़फड़ाना मेरी आँखों
के समान है
कौन-कौन जानता है-किन अशांत
मोड़ों को आराम दिया गया
नंदिनी की उपस्थिति के लिए सहमत
अब उदास दिन ने दूरी की रेखा खींच दी है
मैं इंतजार करना चाहता हूं, अगर
नंदिनी आती है
निशिभंगा हरी घाटी में।

जो धर्म स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व सिखाता है, वही सच्चा धर्म है। - भीमराव अंबेडकर

चाहता हूँ वह क्यों नहीं होता

निरमल दास (एम. टी. एस.)
आर. ए. ओ./ डी. वी. सी./सी.
टी. पी. एस./ चन्द्रपुरा

किसी दिन जिंदगानी में करिश्मा क्यूँ नहीं होता
मैं हर दिन जाग तो जाता हूँ जिंदा क्यूँ नहीं होंता
मेरी इक जिंदगी के कितने हिस्से-दार हैं लेकिन
किसी की जिंदगी में मेरा हिस्सा क्यूँ नहीं होता
जहां में यूँ तो होने को बहुत कुछ होता रहता है
मैं जैसा सोचता हूँ कुछ भी वैसा क्यूँ नहीं होता
हमेशा तंज करते हैं तबीयत पूछने वाले
तुम अच्छा क्यूँ नहीं करते मैं अच्छा क्यूँ नहीं होता
जमाने भर के लोगो को किया है मुब्तला तूने
जो तेरा हो गया तू भी उसी का क्यूँ नहीं होता

खुद में पहले इंसान ढूंढ़े

राजीव कुमार
वरिष्ठ लेखा परीक्षक,
आर० ए० ओ० / डी० भी० सी०/
सी० टी० पी० एस०, चन्द्रपुरा।

अब रोज कौन खुदा ढुंढ़े
जिसको न मिले वही ढूंढ़े....

रात आयी हैं, सुबह भी होगी,
आधी रात में कौन सुबह ढूंढ़े ....

जिंदगी हैं जी खोल कर जियो,
रोज रोज क्यों जीने की वजह ढूंढ़े....

चलते फिरते पत्थरों के शहर में,
पत्थर खुद पत्थरों में भगवान ढूंढ़े .....

धरती कों जन्नत बनाना हैं अगर,
हर शख्स खुद में पहले इंसान ढूंढ़े .....

उच्च शिक्षा वो नहीं जो हमें सिर्फ जानकारी देती है बल्कि वह है जो हमारे जीवन को सफलता का एक नया आयाम देती है। - रवीन्द्रनाथ टैगोर

अधिकार मनुष्य को तब तक अंधा बनाये रखेंगे, जब तक मनुष्य उस अधिकार को प्राप्त करने हेतु मूल्य न चुका दे। - सरदार वल्लभ भाई पटेल

'यह दीप अकेला स्नेह भरा'।

हिंदी कार्यशाला के दौरान प्रशिक्षण प्राप्त करते कार्मिक एवं उनका उद्‌बोधन करते हुए श्री भरत चंद्र बेहेरा, उप-निदेशक। साथ में हैं हिन्दी अधिकारी एवं श्री प्रियंकर पालीवाल।

नराकास कार्यालय-3 द्वारा महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान) के कार्यालय को प्रदत्त पुरस्कार ग्रहण करते हुए डॉ.सुधा तिवारी (हिन्दी अधिकारी) एवं उप-निदेशक। सम्मान प्रदान कर रहे हैं महानिदेशक, भा.भू.स.(कोलकाता)।

हिन्दी पखवाड़ा 2022 में आयोजित हिंदी कार्यशाला के दौरान प्रशिक्षण प्रदान करती रीता भट्‌टाचार्य।

हिंदी निबंध प्रतियोगिता: हिन्दी पखवाड़ा 2022 के दौरान का आयोजन।

हिन्दी पखवाड़ा 2022 के दौरान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के उपरांत हिन्दी अधिकारी द्वारा पुरस्कार वितरण।

पुस्तक प्रदर्शनी: पखवाड़ा 2022 के दौरान पुस्तक -प्रदर्शनी का शुभारंभ महानिदेशक महोदया ने रिबन काटकर किया।

पुस्तक प्रदर्शनी 2022: किताबों के साथ एक दिन।

पुस्तक प्रदर्शनी 2022:
महानिदेशक महोदया दीप प्रज्ज्वलित करते हुए।

पुस्तक प्रदर्शनी 2022:
किताब चुनते अधिकारी
एवम कर्मचारी।

पुस्तक प्रदर्शनी 2022:
एक खूबसूरत लम्हा।

समापन समारोहः-
पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह में दीप
प्रज्ज्वलित करतीं महानिदेशक महोदया।

समापन समारोहः-
पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह में दीप प्रज्ज्वलित करते उपनिदेशक महोदय।

समापन समारोहः-
पुष्प स्तवक से महानिदेशक महोदया का अभिनंदन।

समापन समारोहः-
पुष्प स्तवक से उपनिदेशक महोदय का अभिनंदन करते हुए श्री सिरला किरण कुमार।

हिन्दी पखवाड़ा 2022 का समापन समारोह।

समापन समारोह के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम में श्री सुमन घोष।

पखवाड़ा 2022 के रंगारंग कार्यक्रम में रवीन्द्रसंगीत पर नृत्य की प्रस्तुति।

अनुभूति पत्रिका के चतुर्थ अंक का लोकार्पण।

पत्रिका का अवलोकन करते हुए महानिदेशक महोदया एवं उपनिदेशक महोदय।

हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह में वक्तव्य रखते हुए महानिदेशक महोदया।

हिन्दी पखवाड़ा 2022 के दौरान पुरस्कार वितरण करते हुए महानिदेशक महोदया।

हिन्दी पखवाड़ा 2022 के दौरान पुरस्कार वितरण करते हुए महानिदेशक महोदया।

राजभाषा के कार्य में विशेष योगदान हेतु विशेष पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री संजय कुमार बोस।

हिन्दी पखवाड़ा 2022 के दौरान पुरस्कार वितरण करते हुए उपनिदेशक महोदय।

हिन्दी पखवाड़ा 2022 के दौरान पुरस्कार वितरण करते हुए उपनिदेशक महोदय।

हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह का संचालन करते हुए हिन्दी अधिकारी। मंच पर विराजमान सुश्री सुपर्णा देब,महानिदेशक एवं श्री भरत चंद्र बेहेरा, उपनिदेशक।

हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह का एक पल।

माँ कहा करती थी

निरमल दास (एम. टी. एस.)
सी.टी.पी.एस./चन्द्रपुरा

माँ कहा करती थी
बेटी,
फलदार वृक्ष की तरह
झुक कर रहना
कितना भी ऊँचा उड़ना
आकाश की बुलन्दियाँ छूना
पर धरती पर पाँव
टिकाए रखना
माँ, तुम कहती थी,
बेटी
विनम्र रहना
सादा और उच्च ख्याल रखना
अपनी बड़ाई स्वयं न करना
ऐसे कर्म करना
लोग तुम्हें चाहें
लोग तुम्हें जानें
लोग तुम्हें पहचानें
तुम सिर झुका कर रहना
पर माँ अमेरिका में तेरी सीख
मेरे काम न आई
यहाँ तो
सब उलटा है
फीके पकवान सजाए जाते हैं
अपनी बड़ाई न करो
तो आप पिछड़ जाते हैं

मेरा सपना

जितेन्द्र कुमार
आंकडा प्रविष्टि/ग्रेड-बी
सी.टी.पी.एस.,चन्द्रपुरा।

मेरा सपना है कुछ ऐसा,
सबसे अलग सबसे अनूठा।
पंछी बन मैं पंख फैलाऊँ,
सारी दुनियाँ मैं घूम आऊँ।
पेड़ बन मैं थम जाऊँ,
जीवन को फल-छाया दे जाऊँ।
नदी बन मैं बह जाऊँ,
सबकी प्यास बुझा जाऊँ,।
बादल बन मैं उड़ जाऊँ,
किसानों के चेहरे खिलाऊँ।
पहाड़ बन मैं अड़ जाऊँ,
मजबूती का पाढ पढ़ाऊँ।
सड़क बन मैं पसर जाऊँ,
पथिको को मैं रास्ता दिखाऊँ।
मेरा सपना है कुछ ऐसा,
सबसे अलग सबसे अनूठा।

अन्याय सहना और गलत के साथ समझौता करना सबसे बड़ा अपराध है।-सुभाष चन्द्र बोस

Printed at Ms.SANA KHURANA-170/1, A.J.C.Bose Road, Kolkata-700014 Mob: 8240727002, 9339764686